BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
November, 2024
Vol.1, Issue 13

Scriptures and Modernism
Sovereignty of scriptures of all religions must come to an end if we want to have a united integrated modern India – B.R. Ambedkar

From Editor`s desk

‘Unity in diversity’ has lost significance in India.

Dr. Rahul Kumar Balley
M.A., PhD

As everyone knows it, that India is passing through a critical time at the societal level. The difference between majority and minority is increasing day by day. The ‘Unity in Diversity’ lost significance. Politicians irrespective of political affiliation are trying to divide the society for their political ends. Judicial system, to some extent, is failing to restore law and order in the country.

Democracy is just on paper; the rulers are dictators who want to rule the country by hooks and by crooks. Everyday there are riots, loot, and arson on the roads. Both Hindus and Muslims are thirsty for each other blood. It is observed that religious as well as political leaders from both the communities are igniting the fire. In that case, India would remain disintegrated and one day the Parliamentary democracy would collapse and it would turn India a veritable hell. In this situation, both warring communities would perish.

Scholars and Researchers are feeling suffocated in India to make a non-religious comment for fearing a threat to their life. America, China and Britain in terms of technological advancement are on a path of progress and growth constantly but India is retarding due to suffocation of independent scholarship & freedom of speech.

David Resnik, Bioethicist, very well written, " Freedom of speech is one of science’s most important norms. People must have freedom of thought and speech to generate different points of views. Progress cannot occur if the majority uses its power to supress minority view -points. Placing restrictions on communication can alter scientific work and can have a negative impact on the research environment. Freedom of speech is important for educating & informing the public about scientific issues with policy implications. People need to hear different perspective to develop well-informed & cogent opinions about policy issues.

<u>हिंदी में अनुवाद</u>

“भारत में विविधता में एकता” का महत्व कम हो गया है।

जैसा कि सभी जानते हैं कि भारत सामाजिक स्तर पर नाजुक दौर से गुजर रहा है। बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक के बीच का अंतर दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। 'अनेकता में एकता' का महत्व खत्म हो गया। राजनीतिक संबद्धता के बावजूद राजनेता अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए समाज को विभाजित करने का प्रयास कर रहे हैं। न्यायिक व्यवस्था कुछ हद तक देश में कानून-व्यवस्था बहाल करने में विफल हो रही है।

लोकतंत्र सिर्फ कागजों पर है, शासक तानाशाह हैं जो देश पर हुकूमत करना चाहते हैं। आए दिन सड़कों पर दंगे, लूट और आगजनी हो रही है. हिंदू और मुसलमान दोनों एक-दूसरे के खून के प्यासे हैं। ऐसा देखा गया है कि दोनों समुदायों के धार्मिक और राजनीतिक नेता आग भड़का रहे हैं। उस स्थिति में, भारत विखंडित रहेगा और एक दिन संसदीय लोकतंत्र ध्वस्त हो जायेगा और भारत सचमुच नरक बन जायेगा।

इस स्थिति में, दोनों युद्धरत समुदाय नष्ट हो जायेंगे। तकनीकी उन्नति के मामले में अमेरिका, चीन और ब्रिटेन लगातार प्रगति और विकास के पथ पर हैं, लेकिन भारत स्वतंत्र विद्वता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की घुटन के कारण पिछड़ रहा है।

डेविड रेसनिक, बायोएथिसिस्ट, ने बहुत अच्छी तरह से लिखा है, "अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता विज्ञान के सबसे महत्वपूर्ण मानदंडों में से एक है। लोगों को विभिन्न दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए विचार और भाषण की स्वतंत्रता होनी चाहिए। यदि बहुसंख्यक अल्पसंख्यकों को दबाने के लिए अपनी शक्ति का उपयोग करते हैं तो प्रगति नहीं हो सकती है दृष्टिकोण। संचार पर प्रतिबंध लगाने से वैज्ञानिक कार्य में बदलाव आ सकता है और अनुसंधान के माहौल पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। नीतिगत निहितार्थों के साथ वैज्ञानिक मुद्दों के बारे में जनता को शिक्षित करने और सूचित करने के लिए भाषण की स्वतंत्रता महत्वपूर्ण है। नीतिगत मुद्दों के बारे में सूचित एवं ठोस राय।

(अनुवाद बीआर भारद्वाज द्वारा).

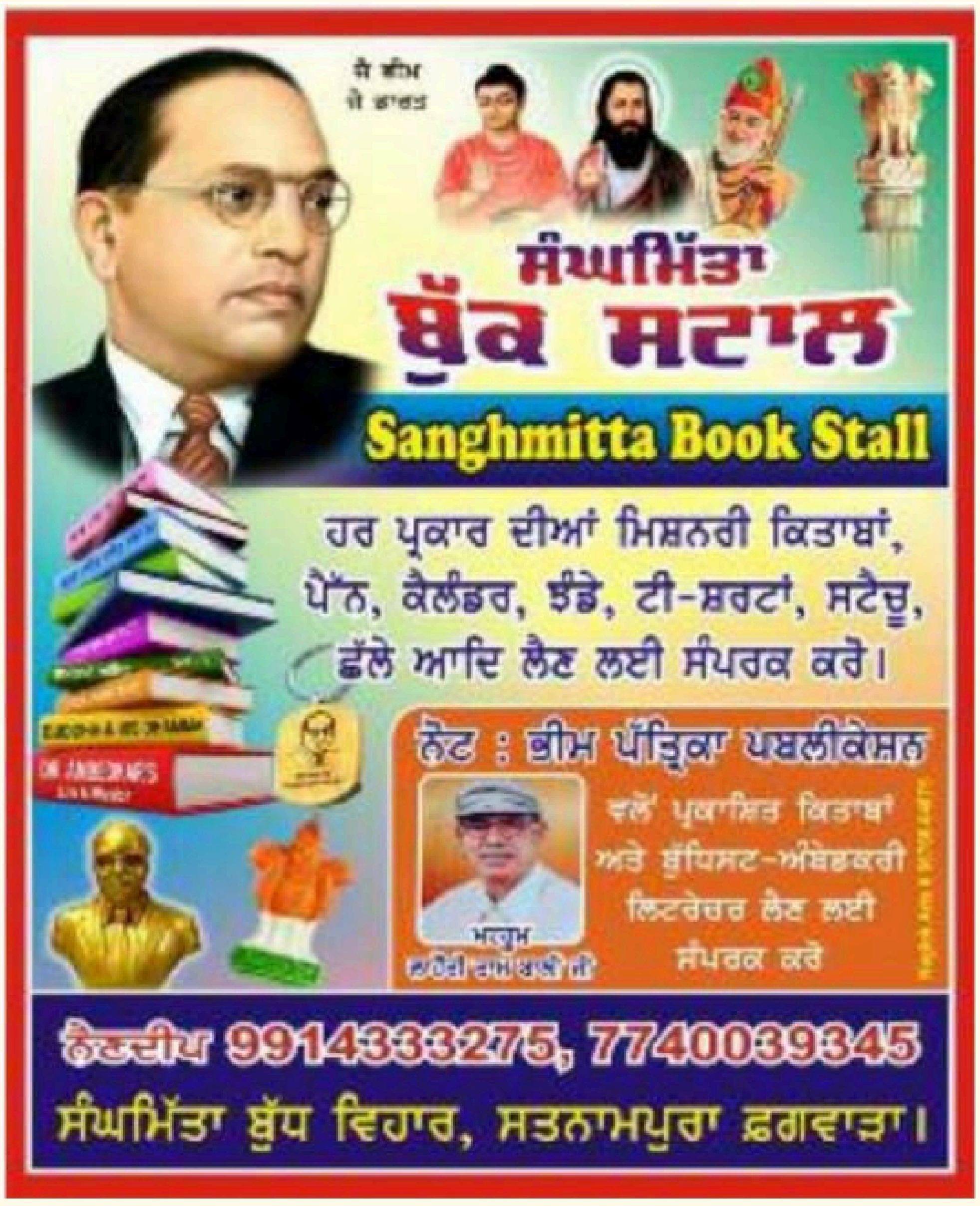

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 13

November, 2024

Modern science has shown that lumping together of individuals into a few sharply marked off classes each confined to one particular sphere does injustices both to the individual and society. The stratification of society by classes and occupation is incompatible with the fullest utilisation of the qualities which is so necessary for social advancement and is also incompatible with the safety and security of the individual as well as of Society in general- Dr. B.R. Ambedkar, (BAWS, vol.3, p.321.)

Why this cry today?

Today, when the Sudra castes are given reservation in the field of education and jobs, they talk about double merit. But when Sudras were deprived of all rights, all kinds of reservation were made for Dwijas only, then no one knew merit, no human equality. They say that if this continues the country will not be able to progress. But when they supported the conspiracy to keep 80 percent of their own society illiterate and stupid, why did they forget the question of how the country will progress. How can a society progress by keeping 80 percent of its population illiterate and depriving it of all rights? What the Hindus suffered by being enslaved by a handful of heretical invaders for centuries was the bad result of this dualistic reservation. Sharma (Ajnat)Surendra Kumar, (2010), Manusmriti in 21st century, Vishv Vijay Pte Ltd, New Delhi, p.131.

हिंदी अनुवाद

आज यह रोना क्यों?

आज, जब शूद्र जातियों को शिक्षा और नौकरियों में आरक्षण दिया जाता है, तो वे दोहरी योग्यता की बात करते हैं। लेकिन जब शूद्रों को सभी अधिकारों से वंचित कर दिया गया, सभी प्रकार के आरक्षण केवल द्विजों के लिए कर दिए गए, तब न तो योग्यता का पता चला, न मानवीय समानता का। उनका कहना है कि अगर ऐसा ही चलता रहा तो देश प्रगति नहीं कर पाएगा। लेकिन जब उन्होंने अपने ही समाज के 80 प्रतिशत लोगों को अशिक्षित और मूर्ख बनाए रखने की साजिश का समर्थन किया तो वे यह सवाल क्यों भूल गए कि देश कैसे आगे बढ़ेगा। कोई समाज अपनी 80 प्रतिशत आबादी को अशिक्षित रखकर और सभी अधिकारों से वंचित रखकर कैसे प्रगति कर सकता है? सदियों तक मुट्ठी भर विधर्मी आक्रांताओं की गुलामी में रहकर हिंदुओं को जो कष्ट सहना पड़ा, वह इसी द्वैतवादी आरक्षण का दुष्परिणाम था। (संदर्भ: शर्मा (अज्ञात) सुरेंद्र कुमार, (2010), 21वीं सदी में मनुस्मृति, विश्व विजय पीटीई लिमिटेड, नई दिल्ली, पृष्ठ 131.

Village in India is a slaughterhouse: -Dr. B R Ambedkar

Ambedkar claimed that this kind of village was a colony of the upper castes and a slaughterhouse there Dalits are slaughtered. He said: The Indian Hindu village is known as republic and they are proud of its internal structure in which there is no democracy, no equality, no liberty, no fraternity. This is a republic of high castes for high castes. For untouchables, it is the imperialism of the Hindus. It is a colony for the exploitation of the untouchables where there are no rights for them. How polluted is the Hindu slaughter house.... (Ambedkar B. R. 2004. 'Gaon', translated in Hindi in Bharti Kanwal's Ambedker ki Kavitaen, translated in English as Poems of Ambedkar in Badri Narayan and A. R. Mishra (eds), Multiple Marginalities. New Delhi: Manohar.

हिंदी अनुवाद

भारत में गांव एक बूचड़खाना है: बीआर अंबेडकर

अंबेडकर का दावा था कि इस तरह का गांव ऊंची जातियों की बस्ती है और वहां एक बूचड़खाना है, जहां पर दलितों का कत्लेआम किया जाता है। उन्होंने कहा: भारतीय हिंदू गांव को गणतंत्र के रूप में जाना जाता है और उन्हें इसकी आंतरिक संरचना पर गर्व है जिसमें कोई लोकतंत्र नहीं है, कोई समानता नहीं है, कोई स्वतंत्रता नहीं है, कोई बंधुता नहीं है। यह उच्च जातियों के लिए उच्च जातियों का गणतंत्र है। अछूतों के लिए यह हिंदुओं का साम्राज्यवाद है। यह अछूतों के शोषण का उपनिवेश है जहां उनके लिए कोई अधिकार नहीं हैं। हिन्दू कत्लखाना कितना प्रदूषित है... (अंबेडकर बी.आर. 2004। 'गांव', भारती कंवल की 'आंबेडकर की कविताएं' में हिंदी में अनुवादित, अंग्रेजी में बद्री नारायण और ए.आर. मिश्रा (संस्करण), मल्टीपल मार्जिनलिटीज में पोएम्स ऑफ अंबेडकर के रूप में अनुवादित। नई दिल्ली: मनोहर.

Hindutva – an indigenised version of Fascism - Banaji

In the context of India, Banaji proposes that with the rise of 'Hindutva,' which she calls, 'an indigenised version of fascism,' there has been a growing 'vigilante publics' that will demoralise, delegitimate, suppress, command or eliminate many existing cultures, where Dalits, religious minorities, etc. will be at a receiving end. (Shakuntala Banaji, "Vigilante Publics: Orientalism, Modernity and Hindutva Fascism in India," Javnost—The Public, 2018, 1–18, https://doi.org/10.1080/13183222.2018.1463349.)

हिंदी अनुवाद

हिंदुत्व - फासीवाद का एक स्वदेशी संस्करण - बनजी

भारत के संदर्भ में, बानाजी का प्रस्ताव है कि 'हिंदुत्व' के उदय के साथ, जिसे वह 'फासीवाद का एक स्वदेशी संस्करण' कहती हैं, वहां 'सतर्क जनता' बढ़ रही है जो कई लोगों को हतोत्साहित, अवैध, दबा देगी, आदेश देगी या खत्म कर देगी। मौजूदा संस्कृतियाँ, जहाँ दलित, धार्मिक अल्पसंख्यक, आदि को नुकसान होगा। (शकुंतला बनजी, "विजिलेंटे पब्लिक्स: ओरिएंटलिज्म, मॉडर्निटी एंड हिंदुत्व फासीवाद इन इंडिया," जावनोस्ट-द पब्लिक, 2018, 1-18, https://doi.org/10.1080/13183222.201 8.1463349।).

Caste has killed public spirit – B.R. Ambedkar

Ambedkar says, "The effect of caste on the ethics of the Hindus is simply deplorable. Caste has killed public spirit. Caste has destroyed the sense of public charity. Caste has made public opinion impossible. A Hindu's public is his caste. His responsibility is only to his caste. His loyalty is restricted only to his caste. Virtue has become caste-ridden and morality has become caste-bound. There is no sympathy to the deserving. There is no appreciation of the meritorious…the capacity to appreciate merits in a man apart from his caste does not exist in a Hindu…have not Hindus committed treason against their country in the interests of their caste? (Ambedkar, "Annihilation of Caste with a Reply to Mahatma Gandhi." P.56.).

हिंदी अनुवाद

जाति ने जनभावना को मार डाला है - बी.आर. अंबेडकर

अम्बेडकर कहते हैं, ''हिन्दुओं की नैतिकता पर जाति का प्रभाव अत्यंत निंदनीय है। जाति ने जनभावना को मार डाला है. जाति ने सार्वजनिक दान की भावना को नष्ट कर दिया है। जाति ने जनमत को असंभव बना दिया है। हिन्दू की जनता ही उसकी जाति है। उसकी जिम्मेदारी सिर्फ अपनी जाति के प्रति है. उसकी वफ़ादारी केवल उसकी जाति तक ही सीमित है। सदाचार जाति-बंधित हो गया है और नैतिकता जाति-बंधित हो गयी है। पात्र के प्रति कोई सहानुभूति नहीं है. मेधावियों की कोई कद्र नहीं होती... अपनी जाति से अलग किसी व्यक्ति के गुणों की कद्र करने की क्षमता एक हिंदू में नहीं होती... क्या हिंदुओं ने अपनी जाति के हित में अपने देश के खिलाफ गद्दारी नहीं की है? (अंबेडकर, "महात्मा गांधी को उत्तर के साथ जाति का विनाश।" पृष्ठ 56।).

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 13
November, 2024

NEWS SNIPPETS

Shailaja Paik- First Dalit woman won The MacArthur Fellowship

- An Indian-American historian and scholar at the University of California who won the MacArthur "genius" fellowship. She was the first Dalit to receive this award, which comes with a grant of $800,000. Paik's work focuses on the lives of Dalit women, who are considered "untouchable" in South Asia's caste system. She has also received the John F. Richards Prize and the Ananda Kentish Coomaraswamy Prize for her book The Vulgarity of Caste.

Reinforced Caste -based division of labour in Indian prisons

- ·Dalits are mostly tasked with cleaning and sweeping. If anyone refuses, he is beaten up by other inmates on the directions of the jail administration- Daulat Kunwar, Dalit Activist.
- ·Dalit inmates are often told to form separate queues for food. It is like feeding us the leftovers…. like animals – Ram Bahadur Singh, who spent Time in jail in Uttar Pradesh. (Times of India).
- ·Supreme Court said, "Caste-based segregation of work in jail unconstitutional. Menial jobs given only to lower castes is forced labour.

Child rights panel NCPCR advises states to stop funding madrasa.

- ·The National Commission for Protection of Child Rights (NCPCR) recommends to stop state funding to madrasas across all states and union territories and to close down Madrasa boards.

Dushyant Chautala and Chandrashekhar forfeited their deposits

- ·In the 2024 Haryana Assembly elections, all candidates of Dushyant Chautala(JJP), a former coalition partner of the BJP and Chandershekar Azad (ASP-Kanshi Ram)party forfeited their deposits. Had Azad not formed an alliance with corrupt Chautala clan, the result would have been different.

Rajasthan Court on Caste Discrimination and Temple Entry Issue

- ·The Court also ruled that the temple was a public place and merely managing it does not make it a personal property of certain Trustees.

- ·"The Trust/trustees must realize that the temple is a public place. Merely because it is managed by certain Trustees does not make it their personal property. Every citizen has the right to access the temple and offer prayers. In this case, it seems the Trustees are creating an unnecessary barrier to the public's right of access."

98 types of Caste Exclusion in Gujarat

- A study in 2010 according to The Economist observes that out of the 1598 villages surveyed in the western state of Gujarat, 98 practices of exclusion were identifed. These exclusions ranged from preventing Dalits from accessing public wells to denying serving tea to Dalits. In 91% of villages surveyed, Dalits were not allowed in non-Dalit temples, and in 98% of them, non-Dalits would not serve tea to Dalits at their homes. The conclusion is that the public spaces in India are not inclusive, for they are fractured and demarcated in the name of caste, ("Unconscionable; Caste Prejudice in India," The Economist (London, January 2018).

Water Crisis looming in the world

- ·Although about 71% of the Earth is covered with water, only 2.5% of it is fresh and suitable for drinking. According to a recent study by Oxford University, published in Science Magazine, 4.4 billion people worldwide do not have access to clean drinking water. This figure is higher than previously reported and indicates a severe danger. According to UN statistics, 26% of the world's population currently faces drinking water challenges. UNESCO stresses the urgent need for an international system to address this crisis before it spirals out of control.

RSS chief Mohan Bhagwat urges Hindus to unite to safeguard the nation

- ·Tyrannical fundamentalist nature exists in Bangladesh, sword of danger hangs over heads of minorities, including Hindus,' says RSS chief Mohan Bhagwat in his annual speech on Vijayadasami. He evoked the phrase that even God does not care about the weak. "Even Gods punish the weak. Remember one thing, neither horse nor elephant and never the tiger, but only a goat is sacrificed in Yagna. Mohan Bhagwat also criticised "cultural Marxists and woke people, accusing them of undermining education and culture, promoting conflict, and disrupting social cohesion. (Ishita Mehra, The Hindu,12 Oct,2024)

Complete disconnect between RSS chief Mohan Bhagwat's remarks and what government does: Kapil Sibal

- ·There have been many divisions in the society after 2014 and minorities were targeted and bulldozers put in operation," the former Union Minister said. Mr. Sibal said there is talk of concepts of 'love jihad' and 'flood jihad'. "I want to ask the RSS why it does not raise questions when such incidents happen? People doubt the citizenship of people. Many controversial statements are given, why does the RSS not question. (The Hindu 13Oct 2024).

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
November, 2024
Vol.1, Issue 13

NEWS SNIPPETS

Mayawati's Rebuke of The 'Casteist People Of Jat Community' Comes From Over Two Decades Of Disappointment

- ·Bahujan Samaj Party (BSP) supremo Mayawati has expressed her disappointment with the 'casteist people of the Jat community' as her party could not win a single seat in the Haryana assembly election.The party's vote share also came down from 4.2 per cent in 2019 to 1.82 per cent this time. This happened despite allying with the Indian National Lok Dal (INLD). (Swarajya 9 Oct 2024).

Academic freedom slipped in India: SAR

- Over the past 10 years, India has plummeted on the academic freedom index ranks, according to the "Free to Think 2024" annual report published by the Scholars at Risk (SAR) Academic Freedom Monitoring Project. SAR is a network of 665 universities across the globe, including Columbia University, Duke University, and New York University. The report has looked extensively at India, Afghanistan, China, Colombia, Germany, Hong Kong, Iran, Israel, Nicaragua, Nigeria, Occupied Palestinian Territory, Russia, Turkiye, Sudan, Ukraine, the U.K. and the U.S., while documenting 391 attacks on higher education communities in 51 countries between July 1, 2023 and June 30, 2024.(The Hindu 8 Oct 2024).

Patriarchy prevalent worries womenfolk

- Recent Research in progressive Maharashtra by Abbink, Datt, Gangadhar, Negi and Ramaswami in May 2022 shows that resistance to direct transfers comes from women who feel they will be worse off by having to buy cereals, without price certainty, and because access to bank accounts is possibly controlled by menfolk. The Jan Dhan Yojana was opened in the name of female head of the home but clearly local patriarchal norms cannot be washed away. (a quoted by Sanjay Ahluwalia, The Asian Age, 24 Oct,2024, p.5).

हिंदी में अनुवाद

प्रचलित पितृसत्ता महिलाओं को चिंतित करती है

- मई 2022 में एबिंक, दत्त, गंगाधर, नेगी और रामास्वामी द्वारा प्रगतिशील महाराष्ट्र में हालिया शोध से पता चलता है कि सीधे हस्तांतरण का विरोध उन महिलाओं से होता है जिन्हें लगता है कि मूल्य निश्चितता के बिना अनाज खरीदने और बैंक खातों तक पहुंच के कारण उनकी स्थिति और खराब हो जाएगी। संभवतः पुरुषों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। जन धन योजना घर की महिला मुखिया के नाम पर खोली गई थी लेकिन स्पष्ट रूप से स्थानीय पितृसत्तात्मक मानदंडों को खारिज नहीं किया जा सकता है। (संजय अहलूवालिया द्वारा उद्धृत, द एशियन एज, 24 अक्टूबर,2024,p.5)

College in Thiruvananthapuram declared first Constitution literate campus in Kerala

·Tyrannical fundamentalist nature exists in Bangladesh, sword of danger hangs over heads of minorities, including Hindus,' says RSS chief Mohan Bhagwat in his annual speech on Vijayadasami. He evoked the phrase that even God does not care about the weak. "Even Gods punish the weak. Remember one thing, neither horse nor elephant and never the tiger, but only a goat is sacrificed in Yagna. Mohan Bhagwat also criticised "cultural Marxists and woke people, accusing them of undermining education and culture, promoting conflict, and disrupting social cohesion. (Ishita Mehra, The Hindu,12 Oct,2024)

Malayinkeezhu Madhavakavi Memorial Government Arts and Science College Principal Priya receiving the Preamble to the Constitution from I.B. Satheesh, MLA, at a function recently.

Over 47,000 complaints filed with NCSC since 2020; caste atrocity, land disputes among main issues

As per information shared by the NCSC in response to an RTI filed by PTI, 11,917 complaints were received in 2020-21, 13,964 complaints registered in 2021-22, 12,402 in 2022-23 and 9,550 complaints so far in 2024. (TH 13Oct,2024)

Representative image | Photo Credit: ARUN KULKARNI

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 13
November, 2024

Pages from the History

Gandi was a veritable destroyer – S.K. Majumdar

Among the fiercest criticisms of Gandhi was contained in a relatively early assessment of his career. S.K. Majumdar, who never met the Mahatma, is strikingly caustic about the man in his Jinnah and Gandhi: Their Role in India`s Quest for freedom (1966). Majumdar opens by conceding that Gandhi was sone of the greatest men who ever lived, but this tribute is soon followed by a negative reference to his “boastful pride”, to his “wishing to set up a Holy Gandhism Empire in India and to be its Poe, and the accusation that the was a ‘veritable destroyer who revelled in destruction”. Majumder believes that Gandhi had no vision for a modern India, and that Jinnah was a nationalist hero who stood up to Gandhi’s ‘authoritarians ‘and ‘obscurantism’, but was driven out of the Congress. Gandhi thus opened the door to a partition by wanting to crush all opposition within India, as a prelude to attempting ‘to convert the whole world to the path of Gandhism’. This plan failed -twice: Once with the Khilafat agitation and then again with the Quit India movement. This second attempt was a ‘boomerang’ that let the Muslims into power and allowed Jiannah to get Pakistan. Gandhi ad the ‘strategy of a Napolean and the cunning of a Machiavelli’, but in the end his ‘life `s mission’ to be ‘world saviour ‘was Jinnah `s opportunity and India`s undoing. Majumdar feels Partition was more Gandhi `s fault than Jinnah `s and could be undone. (Roderick Matthews (2012). Jinnah vs. Gandhi, Hachette India, p.241.

हिंदी में अनुवाद

गांधी सचमुच विध्वंसक थे - एस.के. मजूमदार

गांधी की सबसे तीखी आलोचना उनके करियर के अपेक्षाकृत शुरुआती मूल्यांकन में निहित थी। एस.के. मजूमदार, जो कभी महात्मा से नहीं मिले, अपनी जिन्ना और गांधी: देयर रोल इन इंडियाज क्वेस्ट फॉर फ्रीडम (1966) में महात्मा गांधी के प्रति बेहद संवेदनशील हैं। मजूमदार ने यह स्वीकार करते हुए शुरुआत की कि गांधी अब तक के सबसे महान व्यक्तियों में से एक थे, लेकिन इस श्रद्धांजलि के बाद जल्द ही उनके "घमंडपूर्ण गर्व" का नकारात्मक संदर्भ दिया गया, उनकी "भारत में एक पवित्र गांधीवाद साम्राज्य स्थापित करने और उसका बनने की इच्छा" का नकारात्मक संदर्भ दिया गया। पो, और यह आरोप कि वह एक 'वास्तविक विध्वंसक था जो विनाश में आनंद लेता था'। मजूमदार का मानना है कि गांधी के पास आधुनिक भारत के लिए कोई दृष्टिकोण नहीं था, और जिन्ना एक राष्ट्रवादी नायक थे, जो गांधी के 'अधिनायकवाद' और 'अश्लीलतावाद' के खिलाफ खड़े हुए थे, लेकिन उन्हें कांग्रेस से बाहर निकाल दिया गया था। इस प्रकार गांधी ने 'पूरे विश्व को गांधीवाद के मार्ग पर लाने' के प्रयास की प्रस्तावना के रूप में, भारत के भीतर सभी विरोधों को कुचलने की इच्छा से विभाजन का द्वार खोल दिया। यह योजना दो बार विफल रही: एक बार खिलाफत आंदोलन के साथ और फिर भारत छोड़ो आंदोलन के साथ। यह दूसरा प्रयास एक 'बूमरैंग' था जिसने मुसलमानों को सत्ता में आने दिया और जियाना को पाकिस्तान पाने की अनुमति दी। गांधी ने 'नेपोलियन की रणनीति और मैकियावेली की चालाकी' का विज्ञापन किया, लेकिन अंत में 'विश्व उद्धारकर्ता' बनना उनके 'जीवन का मिशन' जिन्ना का अवसर था और भारत का विनाश था। मजूमदार का मानना है कि विभाजन जिन्ना से ज्यादा गांधी की गलती थी और इसे ठीक किया जा सकता था। (रोडरिक मैथ्यूज (2012)। जिन्ना बनाम गांधी, हैचेट इंडिया, पृष्ठ 241.

China/ Dalai Lama/ India

In October 1960, Chou Enlai(First Premier of the People`s Republic of China- 1954-1976) vented his frustration to the American journalist Edgar Snow. He claimed that the boundary dispute came to the fore ‘ only after ‘ the Dalai Lama had run away and democratic reforms were started in Tibet’. He accused India of wanting to ‘turn China `s Tibet region into a “buffer zone”. They do not want Tibet to become a Socialist Tibet, as had other places in China”. He complained . And then he drew this somewhat far-fecthed conlcusion:” The Indian side .... is using the Sino-Indian boundary question as a card againt progressive forces at home and as capital for obtaining “foreign aid”. (Ramachandra Guha(2007).India After Gandhi: The Hisotry of the World`s largest Demcoracy,Macmillain,p.320.

हिंदी में अनुवाद

चीन/दलाई लामा/भारत

अक्टूबर 1960 में, चाउ एनलाई (पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के प्रथम प्रधान मंत्री- 1954-1976) ने अमेरिकी पत्रकार एडगर स्नो के सामने अपनी निराशा व्यक्त की। उन्होंने दावा किया कि सीमा विवाद 'दलाई लामा के भाग जाने और तिब्बत में लोकतांत्रिक सुधार शुरू होने के बाद ही' सामने आया। उन्होंने भारत पर आरोप लगाया कि वह चीन के तिब्बत क्षेत्र को "बफर जोन" में बदलना चाहता है। वे नहीं चाहते कि तिब्बत एक समाजवादी तिब्बत बने, जैसा कि चीन में अन्य स्थानों पर हुआ है।” उन्होंने शिकायत की । और फिर उन्होंने यह कुछ हद तक दूरगामी निष्कर्ष निकाला: "भारतीय पक्ष .... चीन-भारत सीमा प्रश्न को घरेलू प्रगतिशील ताकतों के खिलाफ एक कार्ड के रूप में और "विदेशी सहायता" प्राप्त करने के लिए पूंजी के रूप में उपयोग कर रहा है। (रामचंद्र गुहा (2007)। इंडिया आफ्टर गांधी: द हिसोट्री ऑफ द वर्ल्ड्स लार्जेस्ट डेमोक्रेसी, मैकमिलन, पृष्ठ 320.

तुम गुल थे हम निखार अभी कल की बात है

तुम गुल थे हम निखार अभी कल की बात है
हम से थी सब बहार अभी कल की बात है

बेगाना समझो ग़ैर कहो अजनबी कहो
अपनों में था शुमार अभी कल की बात है

आज अपने पास से हमें रखते हो दूर दूर
हम बिन न था क़रार अभी कल की बात है

इतरा रहे हो आज पहन कर नई क़बा
दामन था तार तार अभी कल की बात है

आज इस क़दर ग़ुरूर ये अंदाज़ ये मिज़ाज
फिरते थे 'मीर' ख़्वार अभी कल की बात है

अंजान बन के पूछते हो है ये कब की बात
कल की है बात यार अभी कल की बात है

- कलीम आजिज़:

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 13
November, 2024

अंबेडकर का आगमन दिवस ऐतिहासिक स्थल अंबेडकर भवन में मनाया गया, नि:शुल्क चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन किया गया और मरीजों को नि:शुल्क दवाएँ दी गईं!

बाबासाहब डॉ. भीमराव अंबेडकर का आगमन दिवस 27 अक्टूबर को अंबेडकर भवन, डॉ. अंबेडकर मार्ग, जालंधर में अंबेडकर भवन ट्रस्ट द्वारा एक नि:शुल्क चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन करके बड़ी धूमधाम और श्रद्धा के साथ मनाया गया। नि:शुल्क चिकित्सा जांच शिविर में अत्यंत अनुभवी चिकित्सक डॉ. चरणजीत सिंह एमएस ऑर्थो, पूर्व एसएमओ; डॉ. चंद्र प्रकाश एमबीबीएस, पूर्व एसएमओ; डॉ. अमरदीप सिंह एमबीबीएस; डॉ. नवदीप एमबीबीएस और डॉ. जैस्मीन एमडी (मेडिसिन) ने मरीजों की मुफ्त जांच की और उनको मुफ्त दवाएं प्रदान कीं। स्मरण रहे कि 27 अक्टूबर 1951 को बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर जालंधर में उसी स्थान पर आये थे और उन्होंने लाखों लोगों को संबोधित किया था। बाबा साहब के चरणों से स्पर्शित यह भूमि प्रमुख अंबेडकरवादी श्री लाहौरी राम बाली ने अपने साथी श्री करम चंद बाठ के सहयोग से 1963 में एक-एक रुपया एकत्र कर खरीदी थी। बाली साहब ने 1972 में इसे 'अंबेडकर भवन ट्रस्ट' के नाम से एक ट्रस्ट बनाया और फिर अपने साथी ट्रस्टियों की मदद से इस पर एक आलीशान भवन बनवाया। उसी स्थान पर नि:शुल्क चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन कर बाबा साहब का आगमन दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रख्यात अंबेडकरी एवं बौद्ध विद्वान डॉ. सुरिंदर अज्ञात ने कहा कि 27 अक्टूबर 1951 हम सभी के लिए एक ऐतिहासिक दिन है। इस दिन बाबा साहब डॉ. अंबेडकर ने पंजाब की तीन दिवसीय यात्रा शुरू की थी और पहले दिन उन्होंने इस स्थान पर बड़ी संख्या में लोगों को संबोधित किया और उनसे भारतीय संविधान में निहित अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहने का आग्रह किया। डॉ. अंबेडकर के निरंतर संघर्ष के कारण ही भारत में लाखों लोगों को सदियों बाद शिक्षा, सरकारी नौकरियों में हिस्सेदारी और समान अधिकार मिले। अंबेडकर भवन ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सोहन लाल ने नि:शुल्क चिकित्सा जांच शिविर के महत्व का उल्लेख किया और जरूरतमंदों को इस आयोजन का अधिकतम लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि बाबा साहब ने अथक संघर्ष करके हमें सुखी जीवन जीने के काबिल बनाया है। अंबेडकर भवन ट्रस्ट ने जहां समाज में जनजागरूकता लाने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं, वहीं बाबा साहब की स्मृति को समर्पित यह कार्यक्रम भी ट्रस्ट की जनहित योजना का हिस्सा है। उन्होंने डॉक्टरों की टीम और उनके सहयोगियों का स्वागत किया और उन्हें धन्यवाद दिया। कार्यक्रम की शुरुआत में ट्रस्ट के महासचिव डॉ. जी.सी. कौल ने अंबेडकर भवन के ऐतिहासिक महत्व और इस प्रमुख केंद्र से पंजाब में समय-समय पर शुरू किए गए अंबेडकर जनहित आंदोलनों का विस्तार से उल्लेख किया। उन्होंने बाबा साहब की ऐतिहासिक पंजाब यात्रा से जुड़े इस स्मारक अंबेडकर भवन के निर्माण में ट्रस्ट के संस्थापक सदस्यों श्री लाहौरी राम बाली, सेठ करम चंद बाठ और उनके सहयोगियों की कड़ी मेहनत, समर्पण और प्रतिबद्धता को सलाम करते हुए एडवोकेट आर.सी. पाल रिटा. जज के प्रयासों की सराहना की। इस अवसर पर 27 अक्टूबर 1951 को बाबा साहब डॉ. अंबेडकर जी के आगमन पर शेड्यूल कास्ट फेडरेशन पंजाब के तत्कालीन अध्यक्ष, पूर्व विधायक सेठ किशन दास द्वारा बाबासाहब के सम्मान में उर्दू में पढ़े गए 'मान पत्र' के गुरुमुखी लिप्यंतरण की कैलिफोर्निया में प्रकाशित देश दोआबा अखबार के प्रधान संपादक श्री प्रेम कुमार चुम्बर द्वारा प्रकाशित प्रति भी जारी की गई। इस अवसर पर सर्ब श्री चरण दास संधू, बलदेव राज भारद्वाज, हरमेश जस्सल, डॉ. महेंद्र संधू, एडवोकेट यज्ञदीप, कमलशील बाली, जसविंदर वरियाणा, तिलक राज, रिटा. राजदूत रमेश चंद्र, प्रोफेसर बलबीर, हरीश संधू, बलवंत भाटिया, सुखविंदर सिंह, दीपक गुप्ता, साहिल, संध्या, मुस्कान वर्मा, गौतम बौद्ध, कविता ढांडे, निर्मल बिंजी, एडवोकेट हरभजन सांपला, कांता कुमारी आदि मौजूद रहे। यह जानकारी अंबेडकर भवन ट्रस्ट (रजि.) के वित्त सचिव बलदेव राज भारद्वाज ने एक प्रेस बयान में दी। (बलदेव राज भारद्वाज, वित्त सचिव, अंबेडकरभवन ट्रस्ट (रजि.) .

Prof. Sohan Lal, Chairman Ambedkar Bhawan Trust(Regd), addressing the audience at Free Medical Camp, Dr. Ambedkar Bhawan, Jalandhar.

Prof. G. C. Kaul, General Secretary, Ambedkar Bhawan Trust(Regd) addressing the audience at Free Medical Camp, Dr. Ambedkar Bhawan, Jalandhar

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका

November, 2024

Vol.1, Issue 13

Buddha Gaya Maha Buddha Vihara should be freed from non-Buddhists

Hon'ble Bhante Chandra Kirti Ji Buddha Vihar Tarkhan Muzara (Phillaur), President Advocate, Punjab Buddhist Society. Harbhajan Sampla, Chairman of Ambedkar Bhavan Trust Sohan Lal ji, General Secretary of Ambedkar Bhavan Trust Dr. GC Kaul Ji and UK's eminent international body 'Federation of Ambedkarites and Buddhists organizations (FABO)' convener. A memorandum in the name of the President of India was submitted to the Deputy Commissioner of Jalandhar by the Buddhist and minority community organizations of Punjab under the leadership of Dr. Harbans Virdiji.

A group from Mumbai visited Dr. Ambedkar Bhawan Jalandhar- A Historical Place

मुंबई से डॉ. श्री गौतम परिहार, श्री भगवान कार्डे और श्री विवेक साल्वी के नेतृत्व में 15 व्यक्तियों का एक समूह, जालंधर के अंबेडकर मार्ग स्थित अंबेडकर भवन का दौरा करने आए थे। इस ऐतिहासिक जगह को देखकर सभी बहुत खुश हुए। उन्होंने तथागत बुद्ध की प्रतिमा के सामने नमन किया और बुद्ध वंदना, त्रिशरण और पंचशील का जाप किया। ट्रस्टी चरण दास संधू, बलदेव राज भारद्वाजव महेंद्र संधू ने उनका स्वागत किया। प्रोफेसरअरिंदर सिंह ने उनकी यात्रा के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

BHEEM PATRIKA
ਭੀਮ ਪੱਤ੍ਰਿਕਾ
November, 2024
Vol.1, Issue 13

Celebration of ‘Dhamma Chakra Pravartan Diwas’ at Ambedkar Bhawan, Jalandhar

On 14 October 1956 in Nagpur, 'Dhamma Chakra Pravartan Diwas', dedicated to the historical and important event of Ambedkar abandoning Hinduism and embracing Buddhism, was celebrated with great enthusiasm and pomp at Ambedkar Bhawan, the historical land of Punjab, on October 14, 2024. On this occasion, Bhante Darshandeep Mahathero and Bhante Pragya Bodhi Thero, prominent scholars of the Bhikkhu Sangha of Takshila Maha Buddha Vihar, Ludhiana, an important Buddhist center of Punjab, gave Dhamadeksha after the Trisharan recital. Bhante Darshandeep Mahathero, while giving his address, said that 68 years ago, Dr. Ambedkar had abandoned the Hindu religion based on varna and caste system and adopted Buddhism. Ambedkar's decision was aimed at building an Indian society based on equality, freedom and community. This was a great initiative taken by him for human welfare.

Buddha Vihar Siddharth Nagar Dhamma Chakra Puritan – 68th Anniversary of the day celebrated

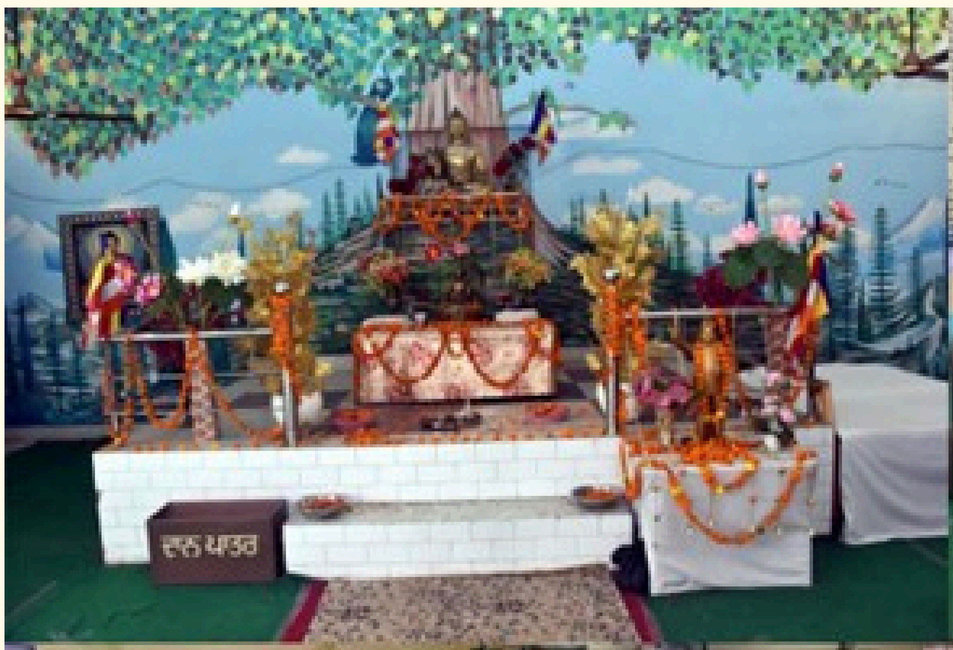

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 13

कलम का कमाल- पुस्तक आल इंडिया समता सैनिक दल (रजि) द्वारा जारी

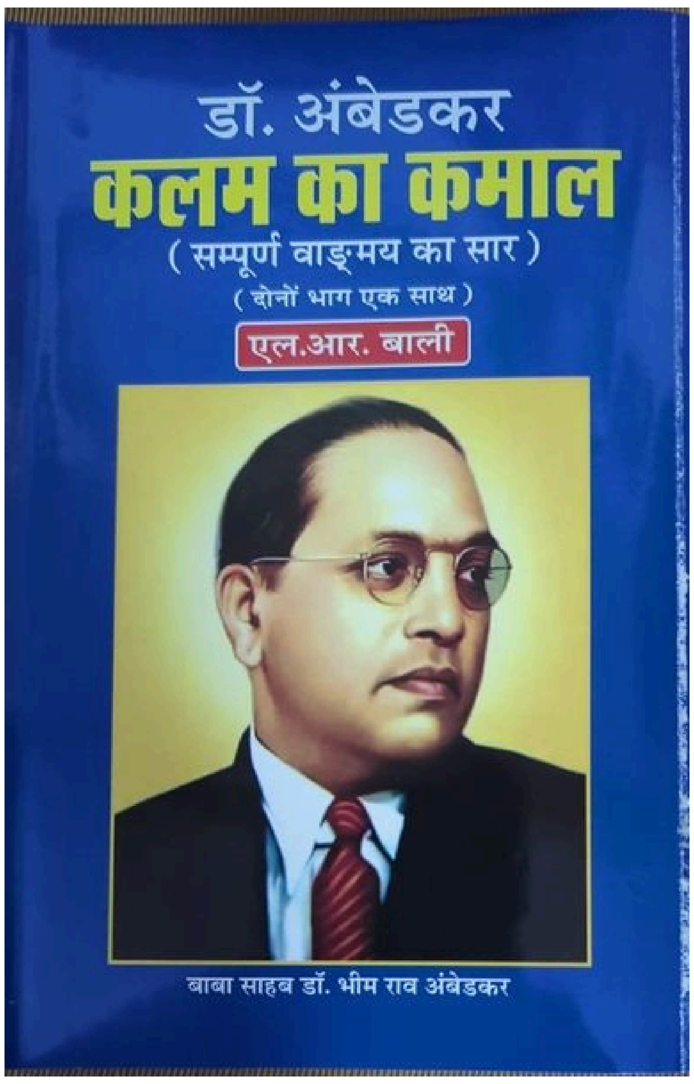

श्री एल.आर. बाली द्वारा लिखित पुस्तक **'कलम का कमाल'** के दोनों भाग एक साथ प्रकाशित हुए। इस पुस्तक के 728 पृष्ठ हैं। यह पुस्तक "आल इंडिया समता सैनिक दल (रजि) के उन योद्धाओं को, जिन्होंनेअपनी पूरी ताकत से महाराष्ट्र सरकार को बाबासाहब डॉ. भीम राव अंबेडकर के अप्रकाशित साहित्य को 'बाबासाहब डॉ. अंबेडकर राइटिंग्ज़ एंड स्पीचेस' के रूप में प्रकाशित करने के लिए मजबूर किया" को समर्पित की गई है। यह हर्ष की बात है कि पुस्तक का विमोचन आज यानी 26 अक्टूबर 2024 को जम्मू-कश्मीर में आल इंडिया समता सैनिक दल (रजि) की केंद्रीय कार्यकारिणी समिति के समारोह में किया गया है। पुस्तक के बारे में दो शब्द डॉ. सुरिंदर अज्ञात ने लिखे हैं और यह पुस्तक डॉ. एचआर गोयल, चेयरमैन, ऑल इंडिया समता सैनिक दल (रजि) के सौजन्य से प्रकाशित हुयी है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए संपर्क 9667101963.

Book Released “ Buddh Ki KhoJ”

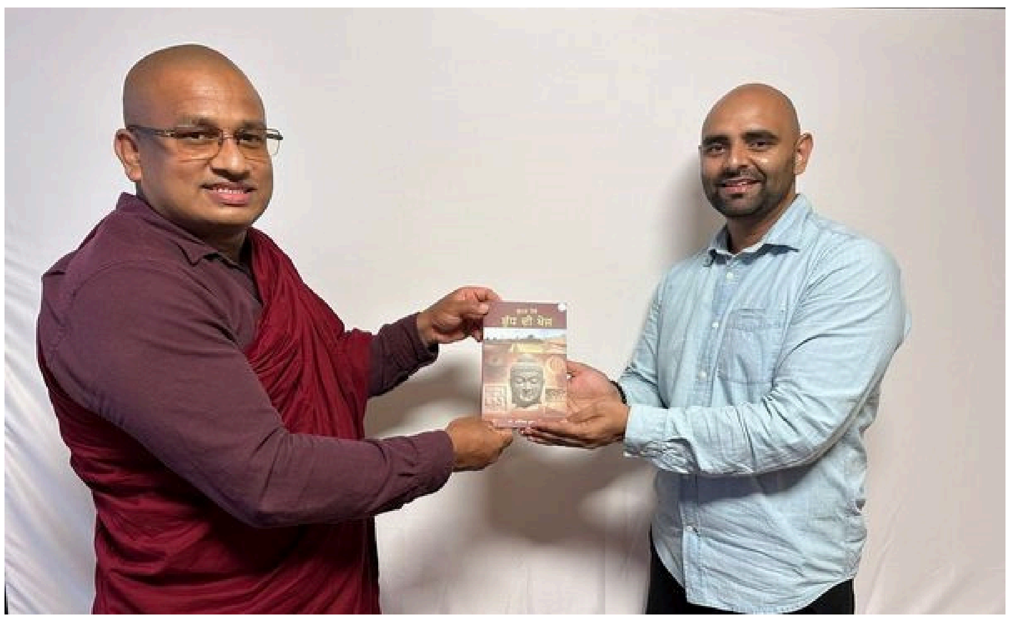

On 12th October 2024, Ashok Vijay Dashami Diwas was celebrated at Takshasila Maha Vihar, Ludhiana.

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 13

Dr Ambedkar Mission Society Europe published **Shri L.R. Balley's book "Dr Ambedkar: Life and Mission"** in German language.The dedicated and staunch members of the Society have been propgating Ambedkarism and Buddhism in Europe. They are actually repaying to the society.

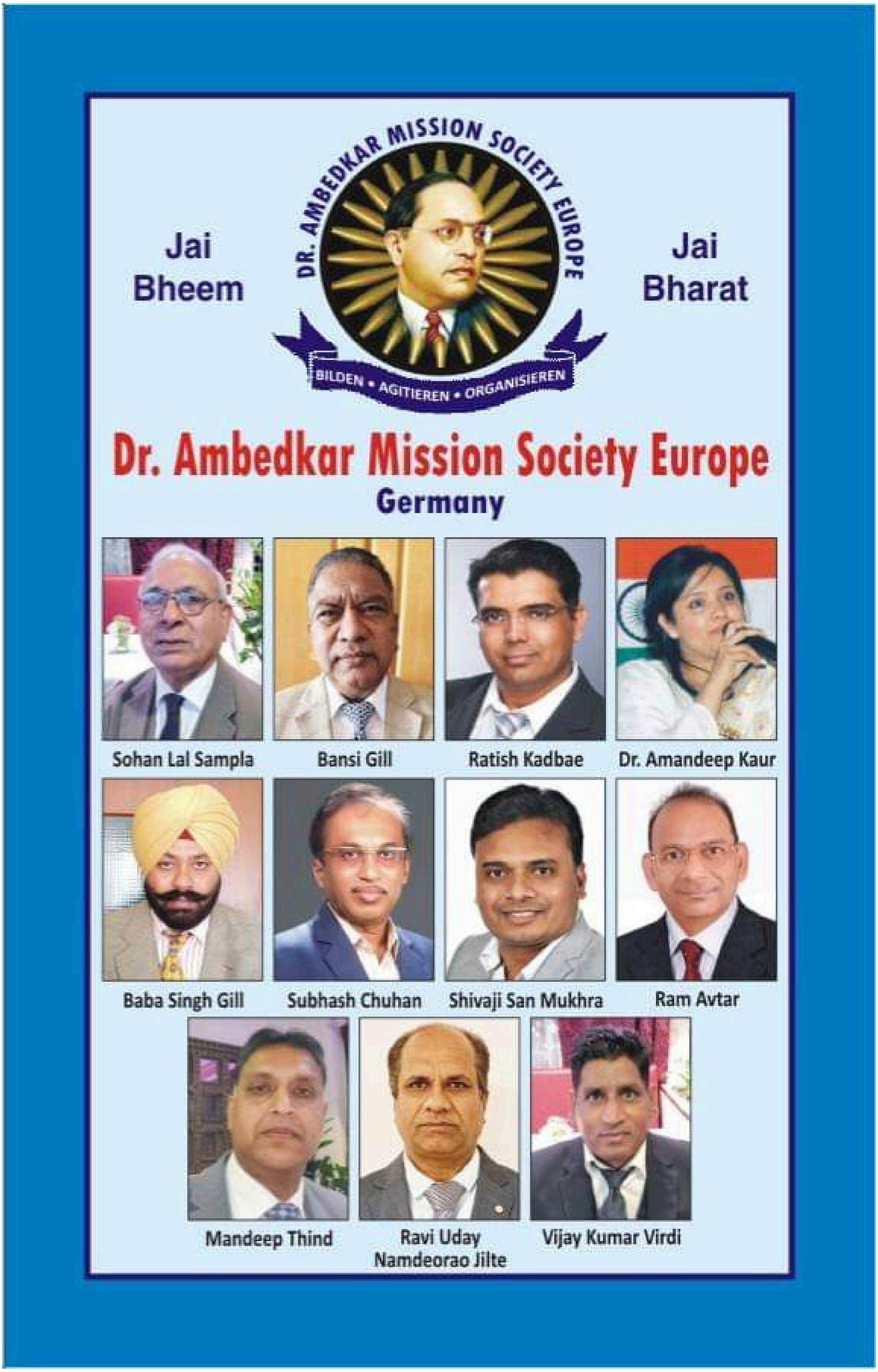

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 13
November, 2024

Bi- annual meeting of All India Samata Sainik Dal (Regd) held on 26.10.2024 in Jammu

Bi-Annual meeting of All India Samata Sainik Dal (AISSD) [Regd.] have been conducted of Central Executive Commitee as well as State level office bearers of AISSD (Regd.), in Jammu on date 26.10.24 (Saturday) under the Chairmanship of Dr. H. R. Goyal. In this meeting financial as well as physical reports of Centre and states were submitted for the period April-24 to Sept.-24. On this occasion inauguration of a book in Hindi language ' Dr. Ambedkar Kalam ka Kamal' written by Late Respected L. R. Balley have been done. An updated brochure of AISSD also published in the meeting.

Second day on 27.10.24 (Sunday) one day workshop of All India Samata Sainik Dal (Regd.) was organised. Central and State Level Office bearers from Haryana, Jammu & Kasmir, Uttar Pradesh, Madhya Pradesh, Maharashtra, Punjab, Rajasthan, Telangana were participated. Aayu. Dr. H. R. Goyal, Chairman, Aayu. Ashok Shende, Vice-Chairman, Aayu. Dr. Sanjay Gajbhiye, General Secretary, Aayu. J. E. Shende, Treasurer, Aayu. Naresh Khokar (Secy. North), Aayu. Vaijnath (Secy. South), Aayu. Dr. D. Yadaiyah (CECM), Aayu. Jyoti Bhaisare, Women Representative were present in the workshop.

Dr. Sanjay Gajbhiye, Genl. Secy. has elaborated the history and agitation of AISSD in detail. Aayu. Ashok Shende has explained concern to the Rules, regulations, execution, conditions and working of AISSD. Aayu. Dr. H. R. Goyal has given valuable information regarding the various volumes of Writings and Speeches of Dr. Babasaheb Ambedkar which published in Hindi by Govt. of India and further how Late L. R. Balley has further gisted it in two volumes i.e. Dr. Ambedkar Kalam Ka Kamal part 1 and part 2. AISSD have a privilege to publish it again in one volume only 'Dr. Ambedkar Kalam Ka Kamal' for ready reference of Ambedkarites, Buddhists as well as General public. Also he has given the information regarding development work of AISSD Training Centre, Chicholi, Nagpur (Maharashtra). Thumbing response have received from the people of Jammu in this workshop. Aayu. Satish Kumar Borkar, CECM (J&K) thanked all on behalf of AISSD of participants attended the meeting/Workshop. After closure of function all officials of AISSD visited the ancient historical Buddhist site, Ambaran at the bank of river Chenab, Akhnur 22 kms away from Jammu city.

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 13
November, 2024

Dr. Omkar A. Wankhede, Former Deputy Director, Allahabad visited Ambedkar Bhawan, Jalandhar

Dr Onkar A. Wankhede Ex deputy Director Allahabad, M. A in Archaeology , M.A. in Pali and Prakrit Gold Medalist, Museologist, Ph. D. in Buddhist Archaeology, L.T.P from British Museum London, visited Ambedkar Bhawan at Dr. Ambedkar Marg, Jalandhar on 28th October, 2024. He was accompanied by the dedicated ambedkarite, Buddhist and the great educationist Honorable Shri Sohan Lal Gindha (S.L. Gindha) Chairman, Bodhisatav Ambedkar Education Society Punjab.

Mr. Wankhede was very much pleased to see the Ambedkar Bhawan. We told him that this is an historic place where Babasaheb Dr. B.R. Ambedkar came on 27th October, 1951 and addressed lacs of people here. We also told him the history of the Ambedkar Bhawan that the renowned Ambedkarite and editor Bheem Patrika Shri L. R. Balley purchased the same piece of land with the cooperation of his associate Shri Karam Chand Bath in 1963. Afterwards in 1972 he formed the Trust in the name of 'Ambedkar Bhawan Trust' and with the help of the Trustees of 'Ambedkar Bhawan Trust' he raised this nice Bhawan Building. We told them that many social agitations, Ambedkarite missionary and Buddhist activities started from this place.

We presented the autobiography of Renowned Ambedkarite and Buddhist Shri L. R. Balley 'Ambedkari Hone Ka Arth' to them. We also presented them the rare photograph of Babasaheb Dr. Ambedkar of 28th October, 1951 with the staff of DAV college Jalandhar when he gave lecture on 'Future of Democracy in India'.

Mr. Wankhede remarked as under:

"I visited Ambedkar Bhawan was so nice neat and clean administered and run by Mr. Bhardwaj and Nirmal like dedicated Buddhist Ambedkarites personalities. Thanks for presenting me a biography of Respected renowned Ambedkarite Buddhist Mr. L.R Balley . I will visit again at our august institution .Jai Bhim Namo Buddhay."

Support for Bheem Patrika

माह अक्टूबर, 2024 के भीम पत्रिका अंक में आयु. सी.आर. परिहार जी (आयु. चतराराम जी परिहार) के फोटो के नीचे त्रुटिवश भोलाराम जी मोबारसा छप गया था. अब हम संशोधित कर उनके फोटो के नीचे उनका सही नाम छाप रहे है. - संपादक.

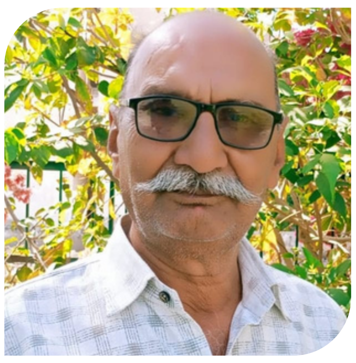

श्री सी.आर. परिहार

आयु. सी. आर. परिहार जी (चतराराम जी परिहार), से. नि., शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार, पाली-मारवाड़ (राज.), जो भीम पत्रिका के गत 2-3 साल से वार्षिक सदस्य हैं, ये भीम पत्रिका के साथ-साथ जरूरतमंद विद्यार्थियों की भी मदद करते आ रहे हैं. अभी हाल ही में ₹1000/- (एक हजार रुपए) की राशि का भीम पत्रिका को अपना सहयोग प्रदान करने पर हम इनका हार्दिक बधाई के साथ बहुत-बहुत साधुवाद ज्ञापित करते हैं.

Shri B. C. Juriya

गत 4-5 वर्षो से भीम पत्रिका को प्रति माह 500/- रूपए की दान राशि प्रदान किये जाने के लिए आयुष्मान बी. सी. झुरिया साहब, सेवानिवृत्त, मुख्य प्रबंधक, मरुधरा बैंक, पाली (राजस्थान) के हम आभारी हैं. झुरिया साहब भीम पत्रिका के आजीवन सदस्य भी है और यह भीम पत्रिका को वर्षों से प्रति माह सहयोग प्रदान करते आ रहे हैं.

हम उनके इस अमूल्य सहयोग के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद के साथ साधुवाद ज्ञापित करते हैं.

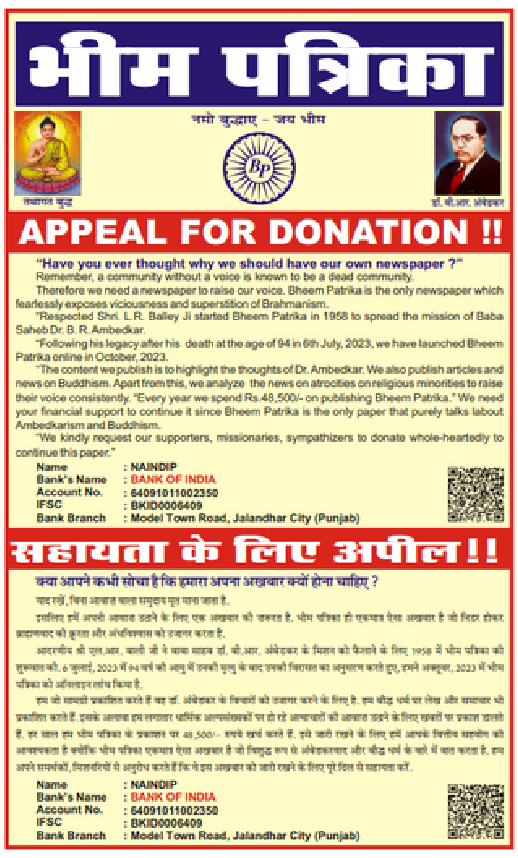

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 13

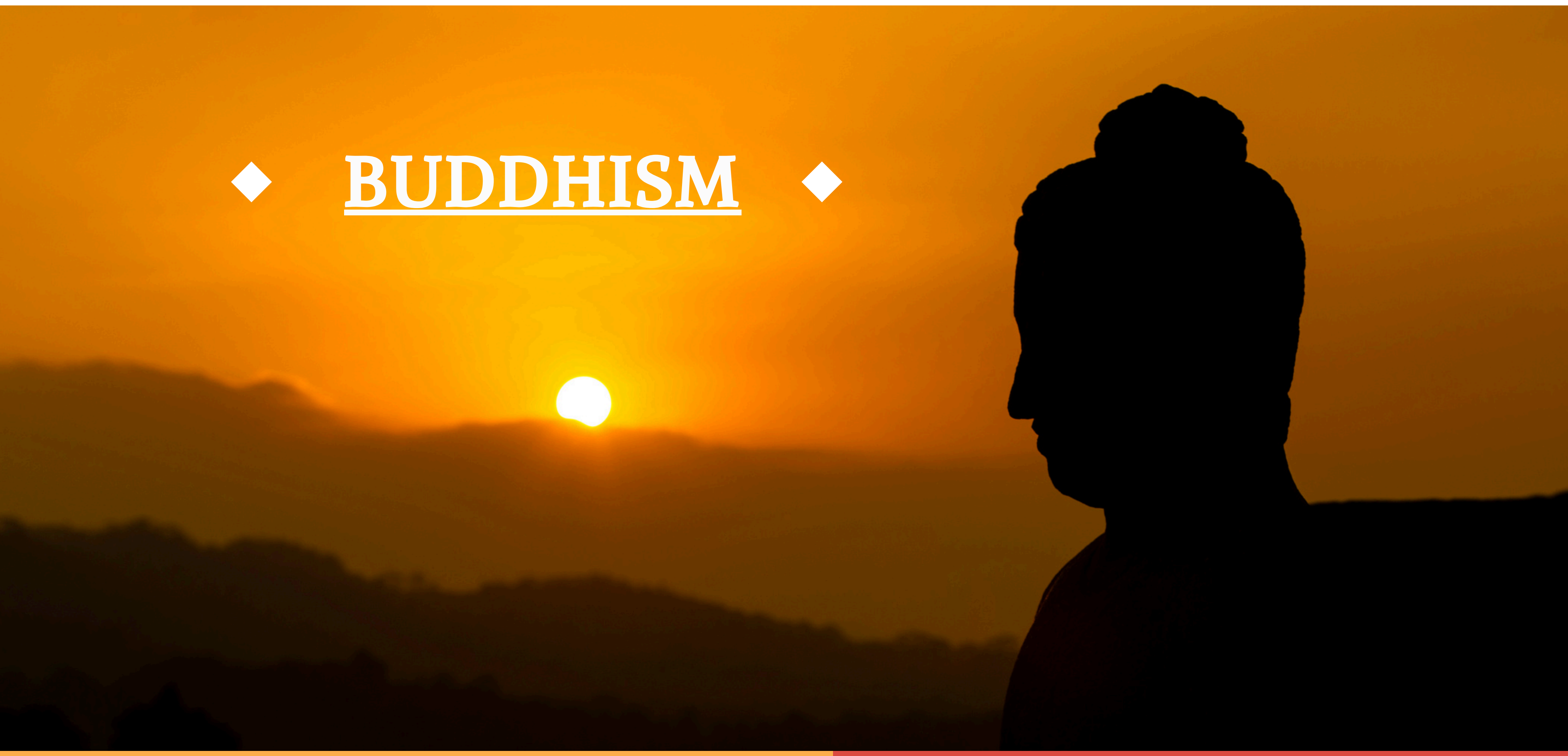

Buddhist Saints & Scholars

In the history of Buddhism, after Gautama Buddha, we came to know about prominent Buddhist saints and scholars from South India who devoted their life for the spread of Buddhism. Some of them are listed below:

Bodhisena:

Bodhisena , a venerable monk of Madurai in Tamil Nadu, was the first Indian Buddhist monk to go to Japan and propagate the Buddha-Dhamma there. It is said that a Japanese monk, Tazi-hi-marito had come to India in about 723 AD to learn more about Buddhism. He met Bodhisena , who was a renowned orator , writer an scholar of Buddhism at that time, and they became good friends. Later Bodhisena was invited by Emperor Shomu to Japan. Accordingly, he sailed for Japan via South Sea and reached Japan in 736 AD. Impressed by his knowledge of the teachings of the Buddha, in particular, his understanding of the Buddha-avatansaka -Mahavaipulya-sutra, Emperor Shomu invited Ven Bodhisena to perform the consecration ceremony of the Maha -Vairochana Buddha. Thus, Bodhisena had the honour to act as the officiating Minister at the historic ceremony in 749 AD of the Great Buddha at Nara. Bodhisena passed away in Japan at the age of 57 in 760 A.D.

Buddhamitra:

Buddhamitra was born at Ponparri village of Arantangi taluk of Tanjore district. He was a reputed Tamil teacher and preacher. Buddhamitra was contemporary of the Chola king, Virarajendra, who ruled from 1063-1070. On the request of the Chola King, Buddhamitra wrote a comprehensive Tamil grammer, and named it ‘Virasoliyam’, after his royal patron. Buddhamitra, who was a Mahayana Bhikkhu, not only refer to the Buddha-Dhamma in the concluding verses of the Tamil grammer but also invariably mentions the Buddha and his virtues while giving examples for the purpose of elucidating rhetorical devices.

हिंदी में अनुवाद

बौद्ध संत और विद्वान

बौद्ध धर्म के इतिहास में, गौतम बुद्ध के बाद, हमें दक्षिण भारत के प्रमुख बौद्ध संतों और विद्वानों के बारे में पता चला, जिन्होंने बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनमें से कुछ नीचे सूचीबद्ध हैं:

बोधिसेना

तमिलनाडु में मदुरै के एक सम्मानित भिक्षु, बोधिसेना, जापान जाने वाले और वहां बुद्ध-धम्म का प्रचार करने वाले पहले भारतीय बौद्ध भिक्षु थे। ऐसा कहा जाता है कि एक जापानी भिक्षु, ताज़ी-ही-मैरिटो बौद्ध धर्म के बारे में अधिक जानने के लिए लगभग 723 ईस्वी में भारत आए थे। उनकी मुलाकात बोधिसेना से हुई, जो उस समय एक प्रसिद्ध वक्ता, लेखक और बौद्ध धर्म के विद्वान थे और वे अच्छे दोस्त बन गए। बाद में बोधिसेना को सम्राट शोमू ने जापान में आमंत्रित किया। तदनुसार, वह दक्षिण सागर के रास्ते जापान के लिए रवाना हुए और 736 ई. में जापान पहुँचे। बुद्ध की शिक्षाओं के बारे में उनके ज्ञान से प्रभावित होकर, विशेष रूप से, बुद्ध-अवतंसक-महावैपुल्य-सूत्र की उनकी समझ से, सम्राट शोमू ने वेन बोधिसेना को महा-वैरोचन बुद्ध का अभिषेक समारोह करने के लिए आमंत्रित किया। इस प्रकार, बोधिसेना को 749 ई. में नारा में महान बुद्ध के ऐतिहासिक समारोह में कार्यवाहक मंत्री के रूप में कार्य करने का सम्मान मिला। बोधिसेना का 57 वर्ष की आयु में 760 ई. में जापान में निधन हो गया।

बुद्धमित्र

बुद्धमित्र का जन्म तंजौर जिले के अरनतांगी तालुक के पोनपर्री गांव में हुआ था। वह एक प्रतिष्ठित तमिल शिक्षक और उपदेशक थे। बुद्धमित्र चोल राजा वीरराजेंद्र के समकालीन थे, जिन्होंने 1063-1070 तक शासन किया था। चोल राजा के अनुरोध पर, बुद्धमित्र ने एक व्यापक तमिल व्याकरण लिखा और अपने शाही संरक्षक के नाम पर इसका नाम 'विरासोलियम' रखा। बुद्धमित्र, जो एक महायान भिक्खु थे, न केवल तमिल व्याकरण के अंतिम छंदों में बुद्ध-धम्म का उल्लेख करते हैं, बल्कि अलंकारिक उपकरणों को स्पष्ट करने के उद्देश्य से उदाहरण देते हुए बुद्ध और उनके गुणों का भी उल्लेख करते हैं।

Buddhism in India from 630-644AD

According to Hiuen Tsang, the second Chinese pilgrim, who was in India during the reign of Harsha, from 630-644AD, there were more than 1000 monasteries and about 50,000 Buddhist monks in India.

हिंदी में अनुवाद

भारत में बौद्ध धर्म (630-644 AD).

दूसरे चीनी तीर्थयात्री ह्वेन त्सांग के अनुसार, जो हर्ष के शासनकाल के दौरान 630-644 ईस्वी तक भारत में थे, भारत में 1000 से अधिक मठ और लगभग 50,000 बौद्ध भिक्षु थे।

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
November, 2024
Vol.1, Issue 13

War does not solve any question

War does not solve any question. Waging war will not serve our purpose. It will sow the seeds of another war. The slayer gets a slayer in his turn, the conqueror gets one who despoils is despoiled in his turn-Gautama Buddha

हिंदी में अनुवाद

युद्ध से किसी प्रश्न का समाधान नहीं होता. युद्ध छेड़ने से हमारा उद्देश्य पूरा नहीं होगा. यह एक और युद्ध के बीज बोएगा. मारने वाले को अपनी बारी में मारने वाला मिलता है, जीतने वाले को अपनी बारी में नष्ट करने वाला मिलता है - गौतम बुद्ध

Studying Buddhism

The ideal method of studying Buddhism would be to read in the original language a number of carefully selected texts belonging to the Pali, Sanskrit, Chinese, Tibetan, Mongolian, or Japanese canonical Buddhist literature. Avoid books written on Buddhism by non-Buddhists. (Sangharakshita(1986), Ambedkar and Buddhism, Windhorse Publications,Glasgow, p.10-11.

हिंदी में अनुवाद

बौद्ध धर्म का अध्ययन

बौद्ध धर्म का अध्ययन करने का आदर्श तरीका पाली, संस्कृत, चीनी, तिब्बती, मंगोलियाई, या जापानी विहित बौद्ध साहित्य से संबंधित कई सावधानीपूर्वक चयनित ग्रंथों को मूल भाषा में पढ़ना होगा। गैर-बौद्धों द्वारा बौद्ध धर्म पर लिखी पुस्तकों से बचें। (संघरक्षिता(1986), अम्बेडकर और बौद्ध धर्म, विंडहॉर्स प्रकाशन, ग्लासगो, पृष्ठ 10-11।

What is mind?

The mind is the origin of all this, the mind is the master , the mind is the cause . If in the midst of the mind there are evil thoughts, then the words are evil, the deeds are evil and the sorrow which results from sin follows that man, as the Chariot wheel follows him (or it) who draws it- Buddha (Dr. Baba Saheb Ambedkar Writings and Speeches , vol-11(The Buddha and His Dhamma,p.282.

हिंदी में अनुवाद

मन क्या है?

मन ही इन सबका मूल है, मन ही स्वामी है, मन ही कारण है। यदि मन में बुरे विचार हैं, तो शब्द बुरे हैं, कर्म बुरे हैं और पाप से उत्पन्न दु:ख उस व्यक्ति का अनुसरण करता है, जैसे रथ का पहिया उसका (या उसका) जो उसे खींचता है - बुद्ध (डॉ.) बाबा साहेब अम्बेडकर लेखन और भाषण, खंड-11 (बुद्ध और उनका धम्म, पृष्ठ 282).

What is mind?

The mind is the origin of all this, the mind is the master , the mind is the cause . If in the midst of the mind there are evil thoughts, then the words are evil, the deeds are evil and the sorrow which results from sin follows that man, as the Chariot wheel follows him (or it) who draws it- Buddha (Dr. Baba Saheb Ambedkar Writings and Speeches , vol-11(The Buddha and His Dhamma,p.282.

हिंदी में अनुवाद

मन क्या है?

मन ही इन सबका मूल है, मन ही स्वामी है, मन ही कारण है। यदि मन में बुरे विचार हैं, तो शब्द बुरे हैं, कर्म बुरे हैं और पाप से उत्पन्न दु:ख उस व्यक्ति का अनुसरण करता है, जैसे रथ का पहिया उसका (या उसका) जो उसे खींचता है - बुद्ध (डॉ.) बाबा साहेब अम्बेडकर लेखन और भाषण, खंड-11 (बुद्ध और उनका धम्म, पृष्ठ 282).

Ashoka expelled 60,000 imposters:

Buddhism as a triple gem stands for Buddha as educating human agency, Dhamma as remedy for social ills, evils and wrong understanding and Sangha as nothing but purifying collective force.In India Kautsa and Brihaspati, a Guru of Charvaka (Lokayata) denounced Vedism and Brahmanism. The six Indian philosophical schools advocated against cruelty, caste, devas and death (says Naren Bhattacharya). Buddha developed Anatmavada and Buddhism made free access in religion for the Shudras, the Untouchables in particular and all others in general, and opposed priestcraft, caste, vedic ritual, and sacrifice. Emperor Ashoka expelled 60,000 imposters lay hidden in the Buddhist order in 246 RC. and purified the Sangha.Naik,C.D.(2010).Buddhism and Dalits: Social Philosophy and Traditions, Kalpaz Publication, New Delhi.p.71.

हिंदी में अनुवाद

अशोक ने 60,000 धोखेबाजों को निष्कासित कर दिया।

त्रिरत्न के रूप में बौद्ध धर्म बुद्ध को शिक्षा देने वाला मानता है ।मानव एजेंसी, सामाजिक कुरीतियों, बुराइयों आदि के उपचार के रूप में धम्म ग़लत समझ और संघ शुद्धिकरण के अलावा और कुछ नहीं सामूहिक बल.भारत में चार्वाक के गुरु कौत्स और बृहस्पति थे। (लोकायत) ने वेदवाद और ब्राह्मणवाद की निंदा की। छह भारतीय दार्शनिक विद्यालयों ने क्रूरता, जाति, देवत्व आदि के विरुद्ध वकालत की मृत्यु (एन एरेन भट्टाचार्य कहते हैं)। बुद्ध का विकास हुआ।अनात्मवाद2 और बौद्ध धर्म के लिए धर्म में नि:शुल्क प्रवेश की व्यवस्था की गई। विशेषकर शूद्र, अछूत और अन्य सभी सामान्य, और पुरोहितवाद, जाति, वैदिक अनुष्ठान और का विरोध किया ।त्याग करना। सम्राट अशोक ने छुपे हुए 60,000 धोखेबाजों को निष्कासित कर दिया ।246 आरसी में बौद्ध आदेश में। और संघ को शुद्ध किया। नाइक, सी.डी. बौद्ध धर्म और दलित: सामाजिक दर्शन और परंपराएँ, कल्पज़ प्रकाशन, नई दिल्ली.पृ.71.

India had the greatest history from 3rd century BC- 7th century AD)

According to Dr Kailash Nath Katju, Minister for Home Affairs, Government of Inia (1952) said, “Those 1000 years (3rd century BC - 7th century AD) were in many ways greatest Indian history. The name and fame of India rose to the highest peaks in those centuries and in realms of art and architecture, learning and piety, Indian achievement reached heights still unsurpassed. It was not a case of those who professed formally their beliefs in Buddhism: the noble doctrine entered and influenced the lives of all, professing and non-professing alike. (Kailash Nath Katju(1951), Buddhism in India, Diamond Jubilee Souvenir of the Maha Bodhi Society of India, Calcutta,p.150.

भारत का सबसे महान इतिहास ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी से लेकर सातवीं शताब्दी ईस्वी तक का है।

भारत सरकार के गृह मंत्री (1952) डॉ. कैला नाथ काटजू के अनुसार, “वे 1000 वर्ष (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व - 7वीं शताब्दी ईस्वी) कई मायनों में महानतम भारतीय इतिहास थे। उन शताब्दियों में भारत का नाम और प्रसिद्धि उच्चतम शिखर पर पहुंच गई और कला और वास्तुकला, शिक्षा और धर्मपरायणता के क्षेत्र में, भारतीय उपलब्धि अभी भी अद्वितीय ऊंचाइयों पर पहुंच गई। यह उन लोगों का मामला नहीं था जिन्होंने औपचारिक रूप से बौद्ध धर्म में अपनी आस्था का दावा किया था: महान सिद्धांत ने प्रवेश किया और सभी के जीवन को प्रभावित किया, चाहे बौद्ध धर्म को मानने वाले हों या गैर मानने वाले। (कैलाश नाथ काटजू (1951), भारत में बौद्ध धर्म, महाबोधि सोसाइटी ऑफ इंडिया की हीरक जयंती स्मारिका, कलकत्ता, पृष्ठ 150).

BHEEM PATRIKA
ਭੀਮ ਪੱਤ੍ਰਿਕਾ
Vol.1, Issue 13

Books in English

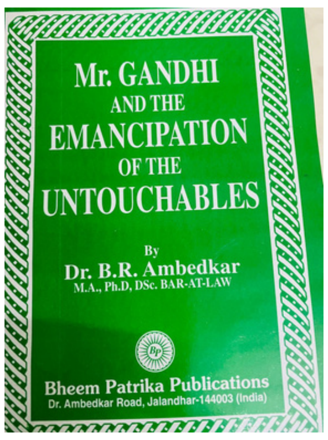

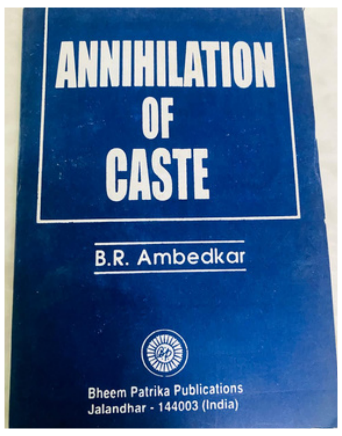

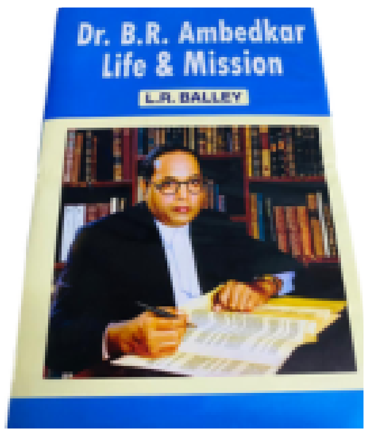

ਸੰਸਥਾਪਕ : ਲਾਹੌਰੀ ਰਾਮ ਬਾਲੀ
ਭੀਮ ਪੱਤ੍ਰਿਕਾ
ਪਬਲੀਕੇਸ਼ੰਸ, ਜਲੰਧਰ।
भीम पत्रिका पब्लिकेशंस
BHEEM PATRIKA PUBLICATIONS
ES-393-A, Street No. 6, Abadpura, Jalandhar-144003
Mob.: 96671-01963

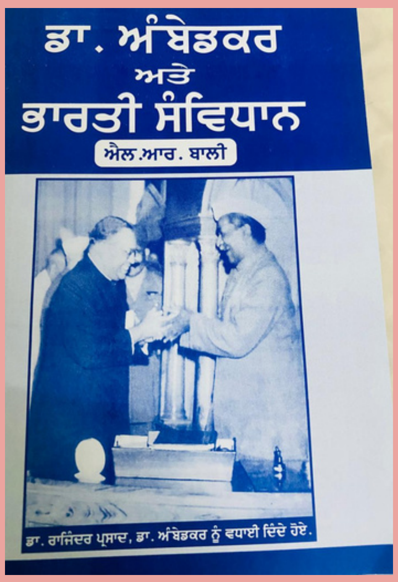

Books in Punjabi

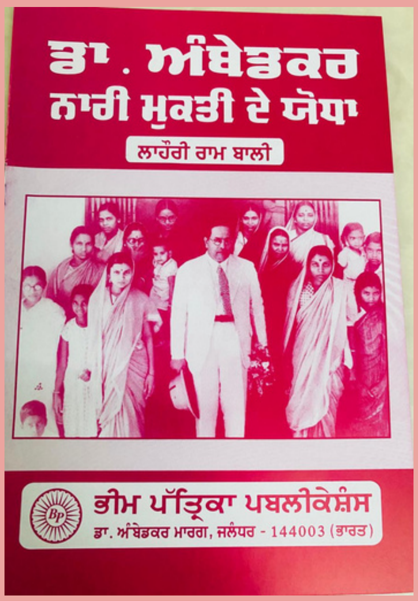

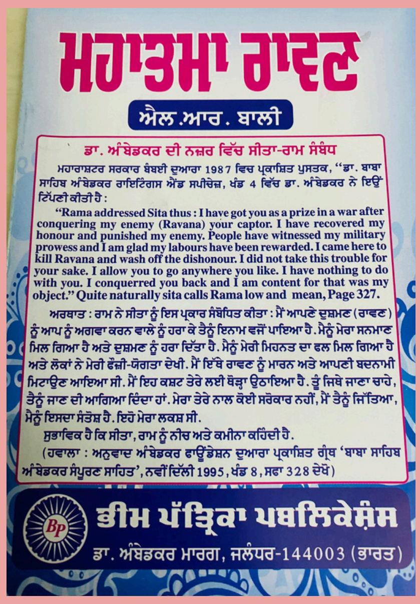

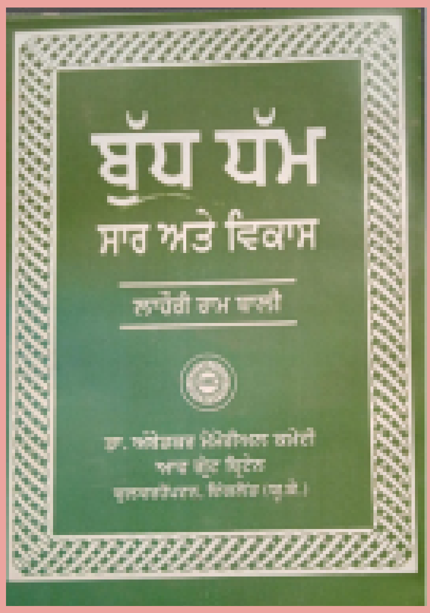

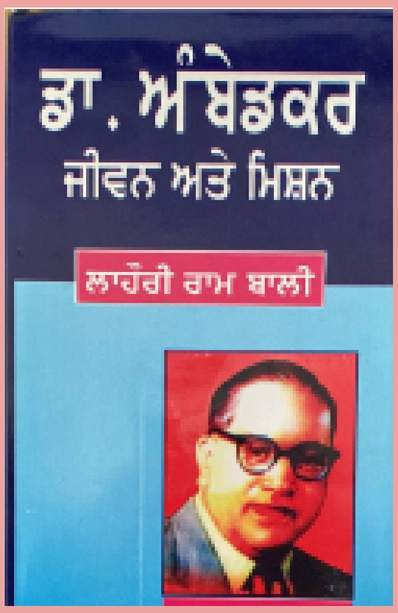

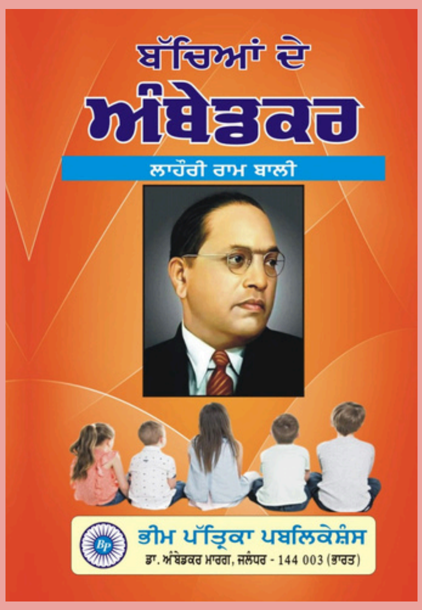

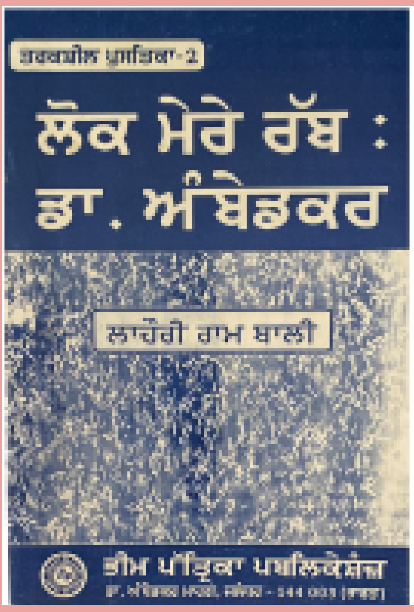

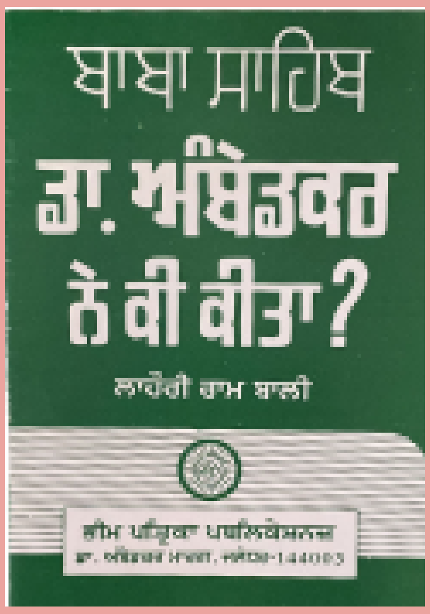

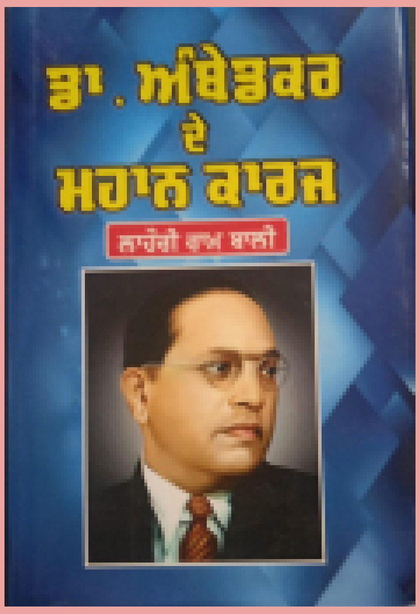

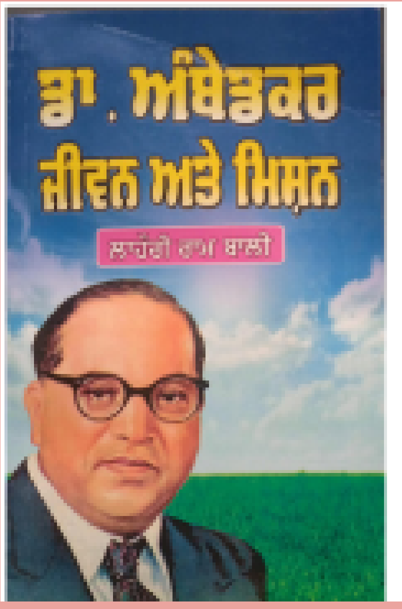

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 13

Book in GERMAN

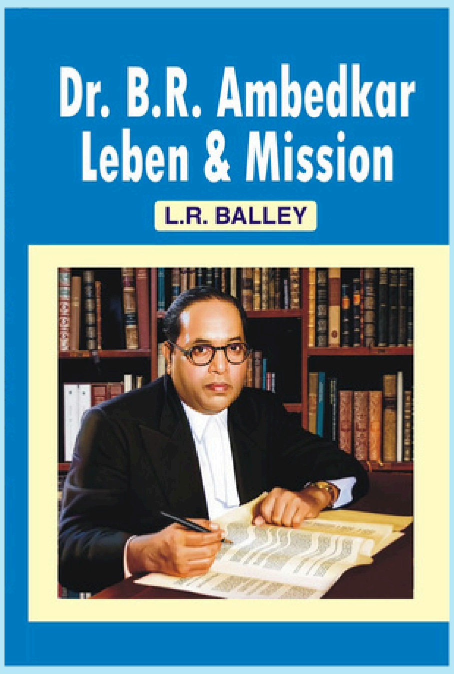

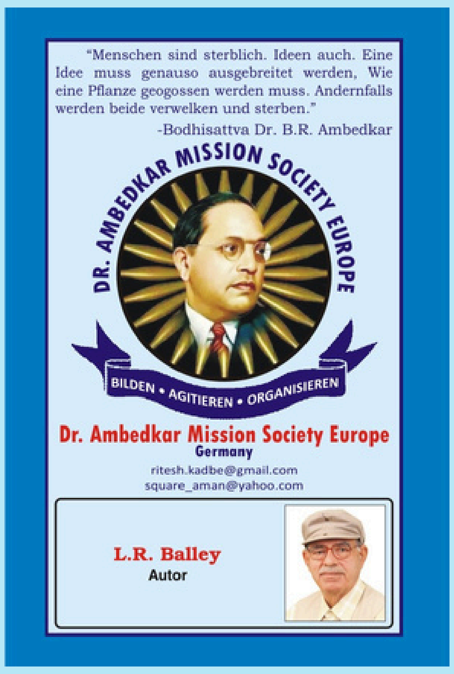

Books in Hindi

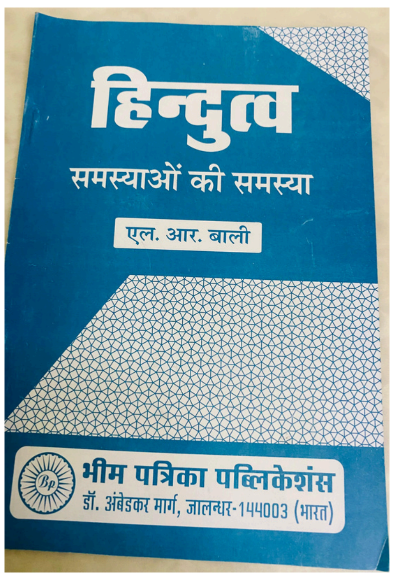

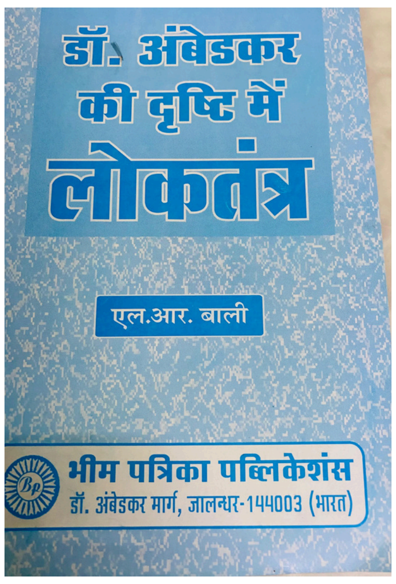

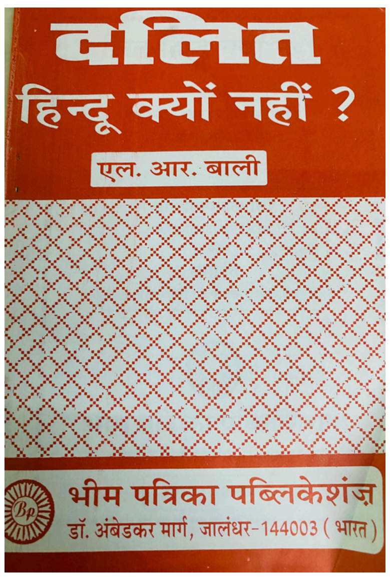

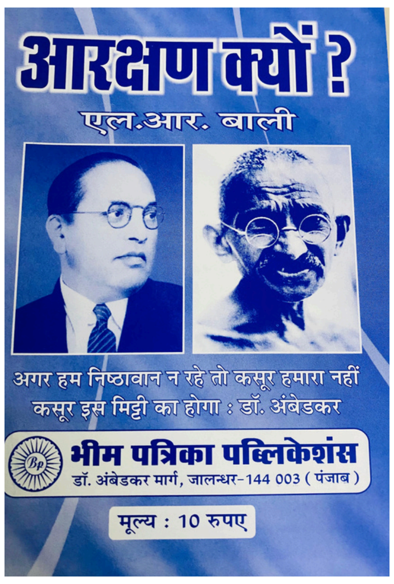

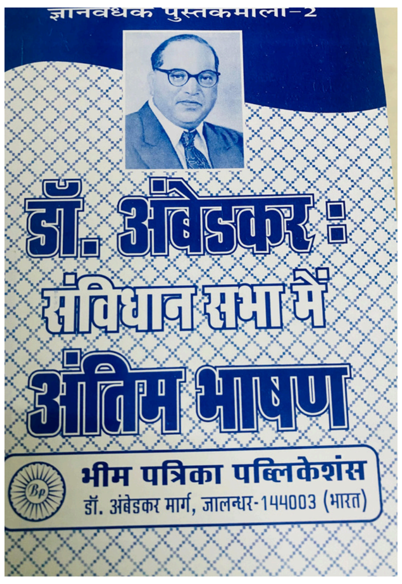

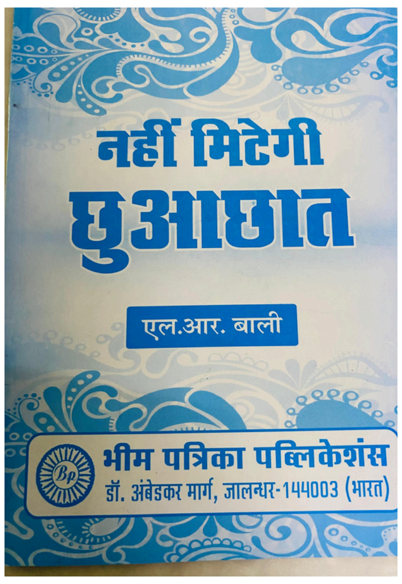

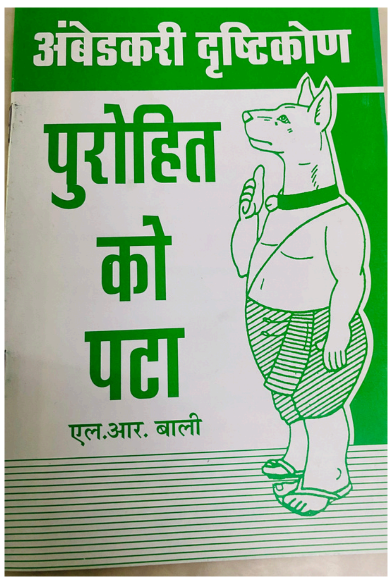

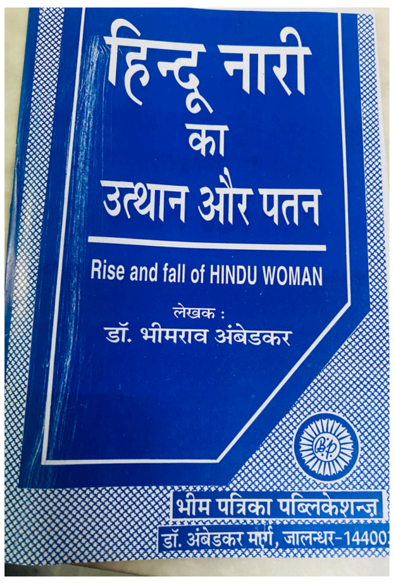

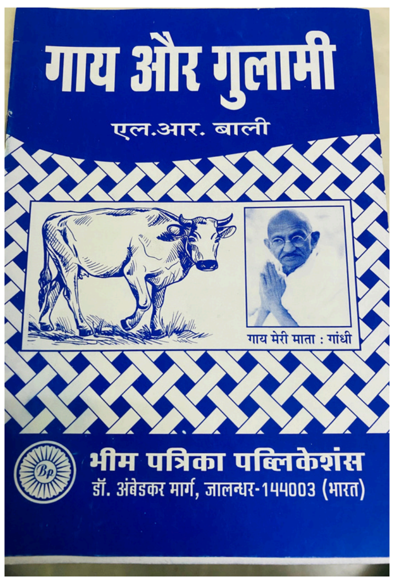

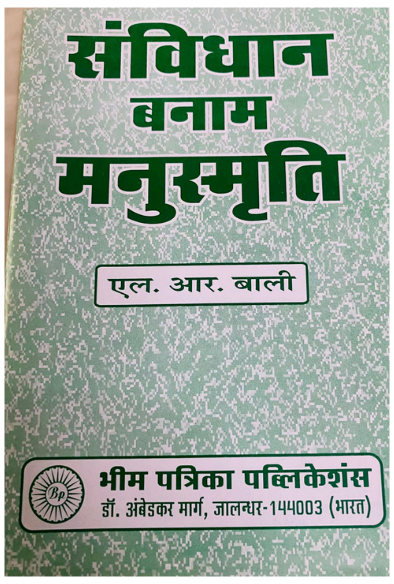

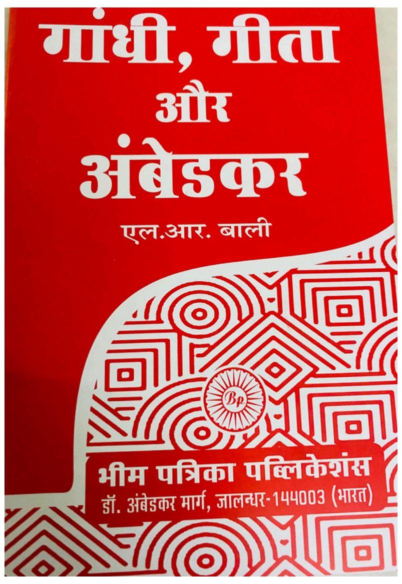

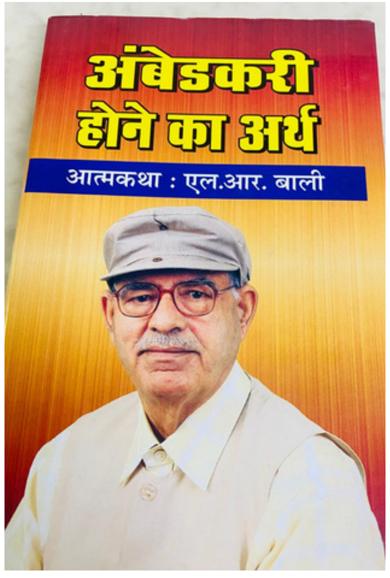

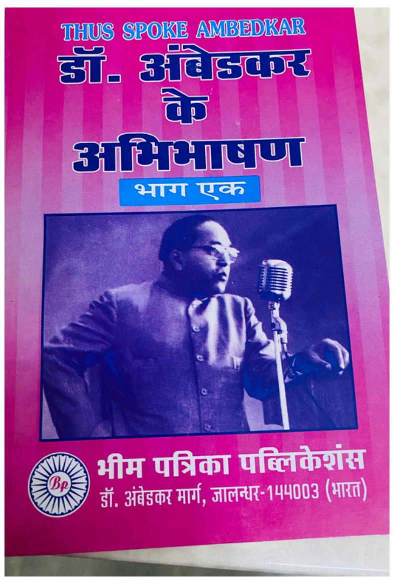

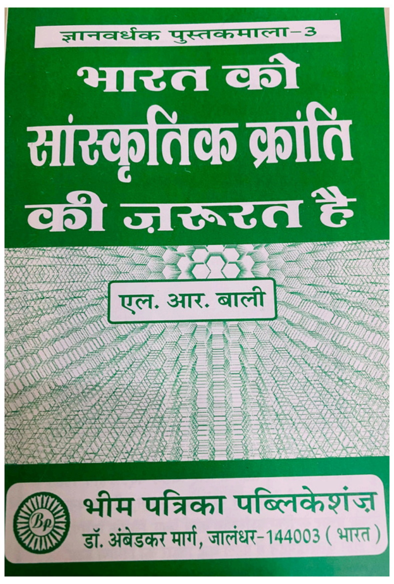

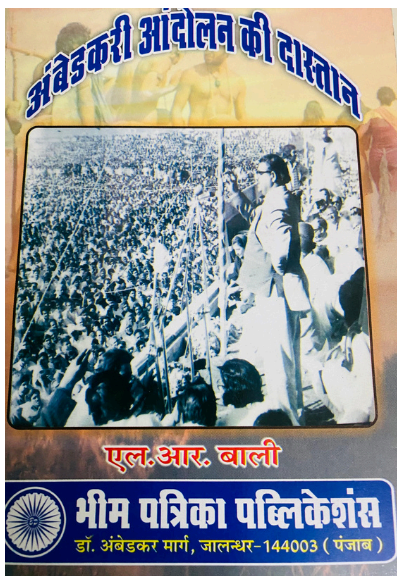

Books in Hindi

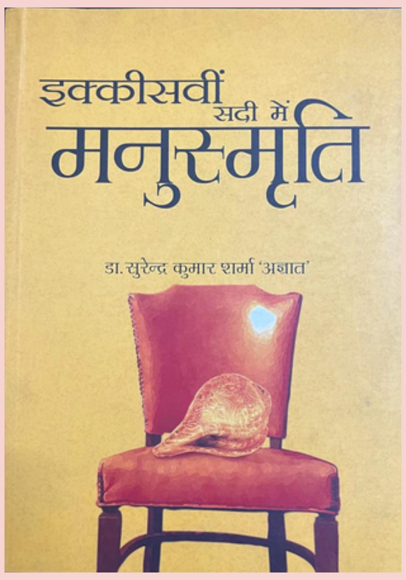

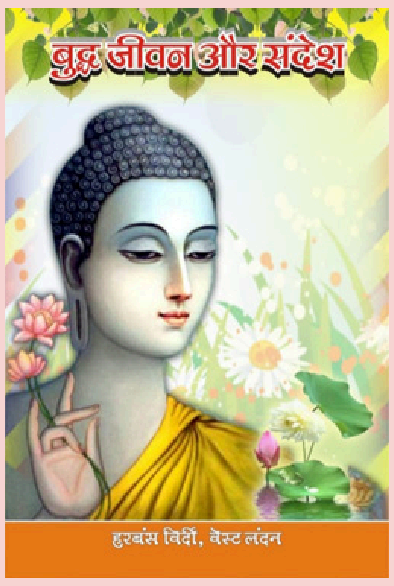

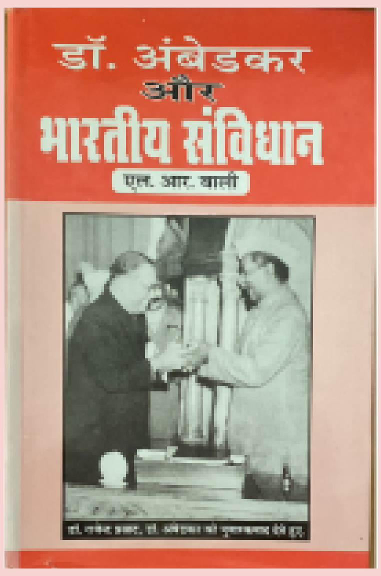

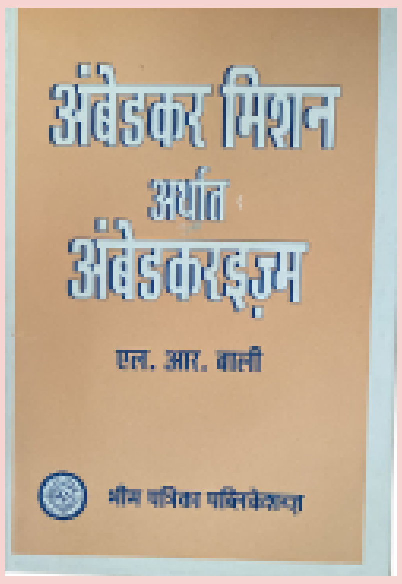

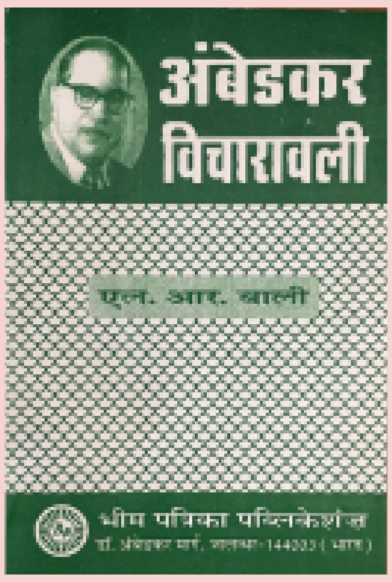

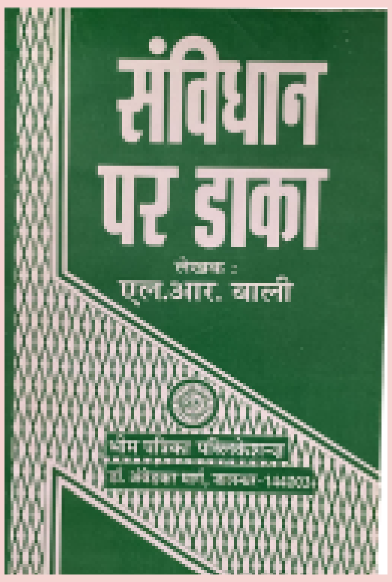

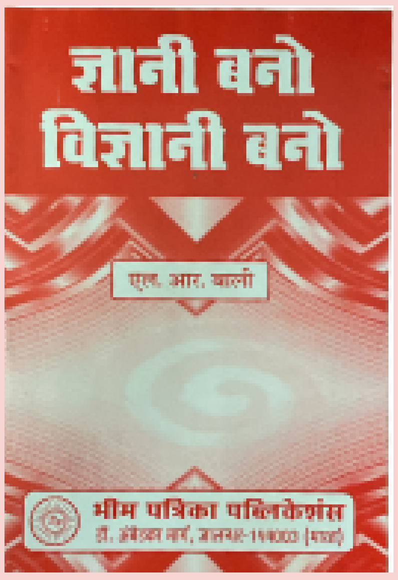

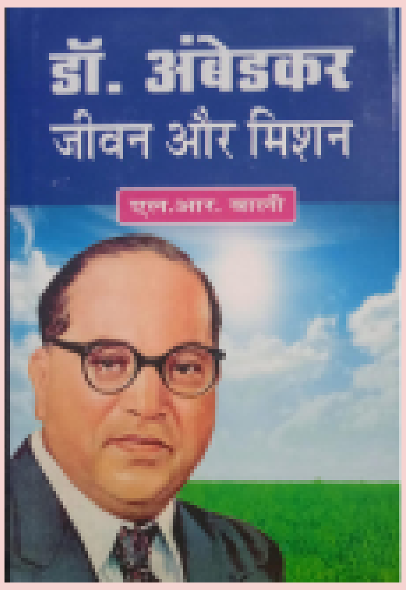

Contact Us:

Bheem Patrika Publications

ES-393-A, Abadpura,
Jalandhar city
Distt. Jalandhar 144003

Mob. - +91 - 96671 01963
E-mail - rkumar1100e@gmail.com
Web. - https://bheempatrika.in